अनुभाव !

रविन्द्र मरडिया

प्रकाशक :

Thank You !
PUBLISHERS

प्रतिलिप्यधिकार © रविन्द्र मरडिया, २०२२

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक से लिखित अनुमति के बिना, इस प्रकाशन के किसी भी भाग को किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से, इलेक्ट्रॉनिक या मैकेनिकल, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या किसी भी सूचना भंडारण और पुनर्प्राप्ति प्रणाली सहित, जिसे अब जाना जाता है, या आविष्कार किया जाना है, को पुन: प्रस्तुत या प्रसारित नहीं किया जा सकता है, सिवाय इसके कि एक समीक्षक जो एक पत्रिका, समाचार पत्र या प्रसारण में शामिल करने के लिए लिखी गई समीक्षा के संबंध में कुछ अंश उद्धृत करना चाहता है.

मूल्य : ₹ ४९०.०० सिर्फ

ISBN: xxx xxx xxx xxx xxx xxx

प्रथम संस्करण

भारत में मुद्रित:

सिद्धि प्रिन्टेक, अहमदाबाद.

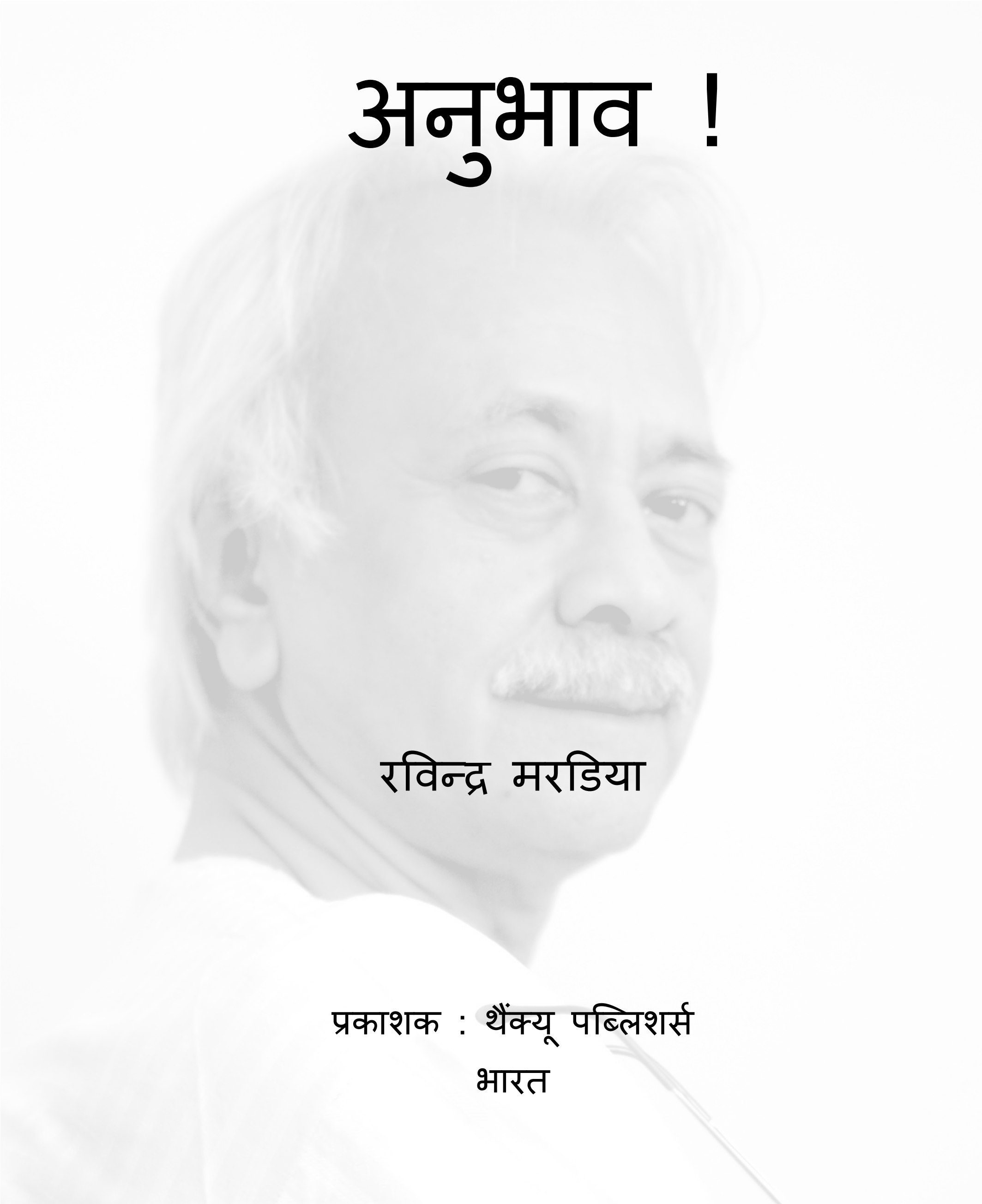

अनुभाव !

रविन्द्र मरडिया

प्रकाशक : थैंक्यू पब्लिशर्स
भारत

अनुभाव !

मेरे अपने अस्तित्व को

समर्पित,

क्यों कि, इस पुस्तक की कविताएं

मेरे निजी जीवन की

परिभाषा और अनुभव

को व्यक्त करती हैं,

काव्य रुप मैं

जिवंत उदहारण देती हैं...

प्रस्तावना

भूमिका

ये कविताएं लिखी शायद पिछले दो-तीन सालों में हैं, लेकिन इनके विचार और उनके भाव पिछले कई सालों से घूम रहे थे. जीवन में जब जब कुछ दिल और दिमाग ने महसूस किया, नया देखने को मिला, कुछ नया सीखने को मिला, वो सब मेरे दिल के किसी कोने में छुपा के रखा था. और शायद अब उबर कर बाहर आ रहा है.

मुझे कविता लिखने का कोई साहित्य ज्ञान नहीं है और ना ही कभी मैं हिंदी का अच्छा ज्ञाता हूँ. जो मुझे समझ में आता है, जो मुझे अच्छा लगता है, उसे कागज पर उतार देता हूँ. हो सकता है की साहित्यिक दृष्टि से मेरी कविताओं में बहुत सारी गलतियां हों. कुछ इनको कविता मानें ही नहीं, लेकिन मैंने जो कुछ भी लिखा है, अपने हृदय से लिखा है, और सिर्फ अपनी स्वयं की खुशी के लिए लिखा है. मुझे कविता लिखने में जो आनंद की अनुभूति होती है, और कहीं नहीं मिलती.

कविता लिखने का अर्थ है, अपने अंदर झांकना और अपने आसपास की दुनिया को देखना. एक कविता प्यार से लेकर व्यापार या जंग लगे दरवाजे से लेकर पुराने खलिहान तक, किसी भी चीज के बारे में हो सकती है. कविता लिखने का विचार थोड़ा डराने वाला हो सकता है, खासकर अगर आपको लगता है कि

आप पर्याप्त रचनात्मक नहीं हैं, या आपके पास कविता लिखने के विचार नहीं हैं. सही प्रेरणा और दृष्टिकोण के साथ, आप एक कविता लिख सकते हैं.

मेरी कुछ कविताओं के शब्दार्थ भावार्थ से बहुत अलग है मैं काफी सारी बातें सीधे कर तरीके से कहना नहीं चाहता हूँ.

कोरोना काल में मैंने जब लिखना शुरू किया तो, एक के बाद एक कई विचार एक साथ दिमाग में पनपने लगे, कई बार कोई कोई कविता कहानी के रूप में, कभी-कभी पता ही नहीं चला कि कहां रुकना है. कविता मेरे अनुभव का वर्णन करते हुए, कुछ ज्यादा लंबी होती गयी, किसी अनुभव को अधूरा छोड़ देना मुझे पसंद नहीं आ रहा था.

फिर एक बार कविताएं लिखने का जो दौर चला तो रुकने का नाम ही नहीं ले रहा था. एक के बाद दूसरी, फिर तीसरी, और कई बार तो एक साथ कई कई कविताएं कागज पर उतरने के लिए मचल रही थी.

मेरे पहले कविता संग्रह 'अर्धविराम' में ज्यादातर कविताएं कुछ ज्यादा पुराने समय की थी, शायद जवानी के दिनों अनुभव के की. ज्यादातर कविताएं मेरे अपने आप से संबंधित थी, मेरे अपने आप के बारे में. एक बार अपने के बारे में लिखना कुछ कम हुआ

तो फिर दुनिया में जो हो रहा है, उसे स्पर्श करने की इच्छा प्रबल हुई. एक साथ बहुत सारी कविताएं कागजों पर अवतरित हो गई.

फिर इन कविताओं को अलग अलग कर क्रम से लगाने की प्रक्रिया शुरू की गयी. कोई भी कविता संग्रह बहुत ज्यादा मोटा ना हो जाए, इसका ध्यान रखते हुए अलग-अलग कविता संग्रह में संकलित किया है.

ये कविताएं लिखने के दौरान मुझे मेरे पुराने कागजों से, फाइलों से, डायरी से, अलग-अलग कविताओं की कुछ कुछ लाइनों के अवशेष मिले. शायद पिछले पचास सालों की जिंदगी में व्यवस्थित तरीके से लिखने का अवसर नहीं मिला, लेकिन भावों को मैंने शब्दों में संजो के रखा था. उन्हीं शब्दों को अब मैं कविता का रूप देने का प्रयास कर रहा हूँ. किसी ने सच ही कहा है 'कविताएं बनाई नहीं जाती, कविताएं अपने आप बन जाती हैं'. शब्द एक अनुक्रम में अपने आप ढल जाते हैं, और कविता का रूप ले लेते हैं. ऐसी ही कविताओं का एक और संग्रह आपके सामने प्रस्तुत करने में मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है.

कुछ समय पहले मैंने कुछ गजलें लिखने का प्रयास किया था. मैंने महसूस किया बहुत आसान कार्य नहीं है. मैंने अपना गजल संग्रह आदरणीय अंजना संधीर जी को दिखाया. और उनसे गुजारिश की कि मुझे सही तरीके से मार्गदर्शन करें. उन्होंने कुछ

गजलों में तो सुधार करने की सलाह दी, लेकिन उनमें से कुछ गजलों को उन्होंने एकमुश्त अस्वीकार कर दिया. और कहा यह कि इनको ग़ज़ल तो किसी भी तरीके से नहीं कहा जा सकता. आपके भाव बहुत अच्छे हैं, आप कृपा करके इन्हें ग़ज़ल ना कह कर कविताओं का नाम दें, तो ज्यादा उचित होगा.

मैंने फिर उन्हीं गजलों को थोड़ा तोड़ मरोड़ कर, भावों को सही तरह से सजीव रखते हुए, नई कविता का रूप दे दिया. इस तरह से कविताओं का संग्रह बढ़ता गया, और मैं एक के बाद दूसरी फिर तीसरी कविता संग्रह का गठन करता रहा. मैं इस कोरोना काल का, जिसने बहुत सारे लोगों को बहुत सारी विपदा में पहुंचाया है, धन्यवाद देता हूँ, जो लेकिन मेरे लिए यह एक स्वर्णकाल साबित हुआ है. खासकर मेरे लेखन की प्रक्रिया को आगे बढ़ाने में. आशा है आपको मेरी कविताएं पसंद आएंगी और मुझे और लिखने के लिए प्रोत्साहित करेंगे.

धन्यवाद !

रविन्द्र मरडिया

अनुक्रमाणिका

मेरे हृदय,	19
एक गुलाब की कली	20
श्राप	22
भारत रत्न	25
आँसू व्यर्थ हैं	26
आत्मा	28
नृत्यांगना	30
सीख	32
मेरे मित्र,	37
आशाहीन प्रेम	38
किसान भाई	40
जीवन इतना आसान होगा!...	43
परिवर्तन	44
स्पष्ट मार्ग	48
मेरी प्रेयसी	50
अज्ञानी वास्तुकार	52
हिटलर को समर्पित	54
हम भूल जाते हैं	57
कोई अप्सरा नहीं मिली	58
क्या होता अगर	61
कैसे छोड़ दिया जाए	62
मेरा भारत महान है	66

मैं अलग हूँ	68
पुल	70
प्रसिद्धि	73
सफेद हाथी	76
रसोई की दुनिया	78
मेरी आत्मा की ठंड	84
पत्थर	86
प्यार	88
कोरोना	90
अधीनता – स्वतंत्रता	92
पूर्व	94
विरोधाभास	96
गीत	98
रफ्तार	100
मेरी इच्छा	102
श्रद्धांजलि से क्या होगा	106
मेरे सपने	108
जीने का रास्ता	110
मेरी वेलेंटाइन	112
अधूरा काम	115
मेरे हाथ	116
काली आँखों वाली	118
टेलीफोन	120
पक्षी और कुत्ता	122

किसी और से ज्यादा	124
प्रिये	126
शतरंज	128
सौभाग्य से, एक भविष्य है	130
मुझे याद है	132
सौंदर्य और मैं	135
वह तुम थी	138
जिन्दा लोगों को सम्मान दो	141
प्यार करता हूँ	145
मेरा कोई पता नहीं है	148
अकेलापन	151
देश प्रेम	154

मेरे हृदय,

सत्य को स्वीकार करो,
विवेक तुम्हें चतुर बना देगा.
हम सत्य से कैसे विदा हो सकते हैं ?
जब इस तरह की,
नीचता की आवश्यकता नहीं है?
तुमको, मेरे प्यारे दोस्त,
यह नसीहत भेजता हूँ.
लेकिन अंत में, मुझे जवाब जरूर देना.
क्या बिना प्यार का दिल होता है ?
दिल जब तक जिंदा रहता है,
तब तक प्यार करता है.
रूह को आराम नहीं, प्यार देता है.
मैं कैसे जी सकता हूँ ?
भगवान, माफ कर दो.
अगर चला गया तो,
वह तो है,
जिसे मेरा दिल चाहता है ?

एक गुलाब की कली

मैं तेरे स्याह काले घुँघराले बालों में,
अपने ह्रदय में प्रसन्नता के साथ देखता हूँ.
जीभ का सुन्न होना,
तुम्हारे होठों पर,
जो गुलाब से भी मीठे हैं.

जब मैं तुझे अपने सामने देखता हूँ,
तब मेरी आंखों से आंसू छलक जाते हैं.
और मैं रोता हूँ.
जब तेरा चेहरा मेरे सपनों को सताता है.
तो दुख मेरे दिल पर छा जाता है.
और मैं रोता हूँ.

मैं एक महान,
गुप्त आनंद के साथ,
तुम्हारी सुंदरता और अनुग्रह,
के बारे में सोचता हूँ,

शर्म से मुक्त.
उत्साह से भरा,
मैं तुम्हारी सुंदरता,
और अनुग्रह को देखता हूँ.
जब वे मुझे वेदना में देखते हैं,
प्यार का दिल टूट जाता है.

कई भावुक प्रेमी,
प्यार को श्रद्धांजलि
देने से इनकार करते हैं.
तुमसे बिछड़ना,
नरक की आग में जलना है.
इस प्रकार परीक्षण किया गया,
रवि अब स्वर्ग या नर्क का
उपहास नहीं करेगा.
एक गुलाब की कली से
उसके प्रेम के कोमल होठों की तुलना करेगा;
एक माणिक के लिए आपके होंठ,
एक अजनबी, मुग्ध, तुलना करेगा.

श्राप

आप यहाँ से चले जाओ,
मैं आपके सौंदर्य को श्राप देता हूँ.
आपके जीवन में,
अंतिम समय तक,
शोक के अलावा कुछ न हो.
आपके घुंघराले काले बाल,
सांप बन जाएं.
आपको डसने के लिए.

आप हमेशा रोएं,
जब अन्य सभी आनंद महसूस कर रहे हों.
आपका दिल सदा दर्द में ही रहे.
आप बहुत स्वच्छंद और निडर हैं.
जिंदगी आपकी, एक नौकरानी की तरह गुजरे.
सदा आपके मालिक के सामने दण्डवत करो.
एक दास बनी रहो.

मैं अपनी सारी आत्मा,
एक ऐसी महिला के लिए दे दूंगा,
जो सच्ची हो.
मैं जीवन भर उसकी सुंदरता की पूजा करूंगा.
लेकिन मेरी इच्छा है, कि
आप की कोई संतान पैदा न हो.
कोई फूल नहीं - सिर्फ कांटे-
तुम्हारे बगीचे में उगें.
हे लड़की, तुम्हारे वास्तविक स्वरूप को,
मेरे सिवा कोई नहीं जानता.

फिर कयामत के दिन,
आपको विश्वासघात के लिए
दंडित किया जाए.
आपको सोते समय सांप काट ले.
जब आप दर्द से कराहते हो,
तब सब कान बहरे हो जाएँ.

लेकिन खस्ता दिल रवि
कितना अकेला और उदास है.

यदि आप आओ और उसे गले लगाओ,
तो वह प्रसन्न होगा.

जो कुछ मैं ने कहा है,
उसमें मुझे यह जोड़ना है,
अगर आप मेरे पास आओ,
गले लगाओ,
तो मैं आपके अच्छे भाग्य की कामना करूंगा.
इसलिए !

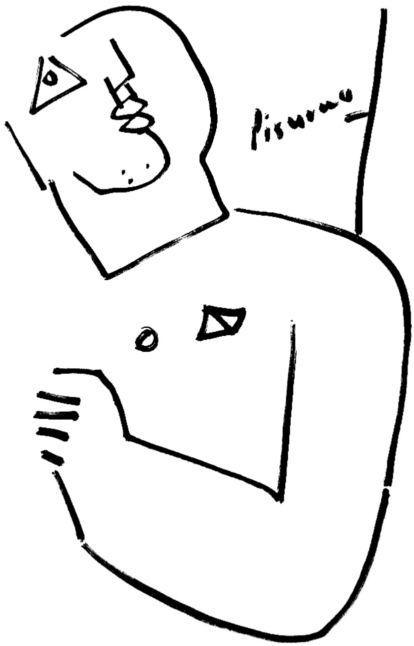

भारत रत्न

गाओ,

प्रिय बहन,

हालांकि यह मुझे दर्द देता है,

गाओ, तुम्हारा भाई सुनता है,

उसका दिल सांत्वना देता है

मुझे आपके गीत बहुत प्रिय है,

ऐ मेरे वतन के लोगों ....

मानो यह मेरी मातृभूमि की

कोमल आत्मा हो

गाओ, प्रिय बहन!

खुशी आपकी है

गाओ, हो सकता है कि दिल टूट जाए

कभी पास न जाए

इस पल, मैं कैसे चाहता हूँ कि

आपकी आवाज ऊंची हो

ताकि मेरे सभी लोक,

मेरी प्रकृति भूमि, सुन सकें

आँसू व्यर्थ हैं

अगर तुम और मैं, अलग हो जाते हैं.
तो मुझे अपने सीने के भीतर,
मेरा दिल धड़कता हुआ चाहिए.
तुम वो दवा हो जिसे देख कर,
बीमार होने का मन करता है.
प्रिये !
तुम वह मरहम हो,
जो मेरे घावों को भर देता है.
मैं तुम्हारे साथ नए सिरे से रहता हूँ.
प्यार एक खुशी है,
एक अनमोल रत्न है.
कोई इंसान,
इसे नकारने की हिम्मत नहीं करता.
प्यार,
मुझे जीवन की क्या आवश्यकता है.
यदि तुम और मैं जुदा हो जायें ?
मैंने मन्नतें मांगीं,

मैंने प्रार्थना की,

मैंने अपने निर्माता के सामने

घुटने टेक दिए,

प्यार,

लेकिन अगर मेरे सपने,

धुएँ में उड़ जाते हैं,

तो वास्तव में प्रार्थनाएँ व्यर्थ हैं.

मेरा प्यार मर चुका है -

रोने से क्या फायदा,

मातम करने से क्या फायदा, रवि ?

यदि प्रेम मर गया है,

और मैं जीवित रह सकता हूँ,

तो आँसू व्यर्थ हैं, रवि !

आत्मा

आत्मा
जिसकी वह इच्छा करती है,
उसकी अनुपस्थिति,
बहुत देर तक सहन नहीं कर सकती.
प्यार वहीं रहता है,
जहां प्रेमी सच्चे रहते हैं.
बिना निरंतरता के,
प्रेम समाप्त हो जाता है.
जो सच्चे रहते हैं,
उनके प्रति वफादार रहो.
अविश्वासी बचने के लिए,
जल्दबाजी करते हैं.
आपके गुण प्रकट नहीं करते.
जहां कोई सद्गुण की प्रशंसा नहीं करता है.
ऐ मेरे दोस्त, बार-बार मैं दोहराता हूँ,
जहां कोई शर्म नहीं, वहां कोई सम्मान नहीं है.
कुछ हासिल करने के लिए नहीं है.

आपकी आत्मा को प्रेरित करने के लिए,
कुछ भी नहीं है.
भगवान परित्यक्त, और
अकेले की रक्षा करते हैं.
आत्माएं जो एकांत में कराहती हैं,
नदी के स्वतारित पत्थर के सामान,
उदास और अकेला वह है,
जिससे कोई मित्रता नहीं करता है.
सच को जान लो, मेरे दिल,
वरना ज़मीर तुम्हें समझदार बना देगा.
मनुष्य सत्य से कैसे विदा हो सकते हैं.
जब इस तरह के किसी भी आधार की
आवश्यकता नहीं होती है ?
आप के लिए, मेरे प्यारे दोस्त,
यह नसीहत मैं देता हूँ
लेकिन मुझे जवाब दो - अंत में,
दिल जब तक जिंदा रहता है
प्यार करता है,
प्यार रूह को आराम नहीं देता.

नृत्यांगना

अगर कोई सबसे प्यारी लड़की
किसी मौके पर मौजूद हो,
हमें एक नृत्य के साथ धोखा दे !
हम बेसब्री से उसके नाच और
ठुमके देखने का इंतजार करते हैं.
और विश्वास करो, कि
हमारी आत्मा की उस पीड़ा से,
और अधिक पीड़ित होगी.
आपकी कलाई पर कंगन,
और प्रत्येक हाथ पर एक अंगूठी के साथ,
हम आपसे,
अपनी कृपा दिखाने की,
भीख माँगते हैं.
एक नृत्य के साथ हमें धोखा दो !
उसकी आकृति नवगठित,
कोमल, पतली, दिव्य है.
वह मेरे दिल को रोमांचित करती है.

उसके सच्चे प्यार के लिए,
मैं पागल हूँ.
इस मौके पर,
हमें एक नृत्य के साथ बहलाओ !
आंसू नहीं,
लेकिन उसकी विलापती आंखों से,
खून बहेगा.
एक साथ, उस प्यारी सी लड़की को
अपनी कृपा दिखाने के लिए
उठ खड़े होंगे, हालांकि
यह मेरा दिल तोड़ देता है,
कि वह हमें
हमें एक नृत्य के साथ धोखा दे !

सीख

मुझे एक कहानी याद है.
जो एक बार एक भेड़िये,
और एक सियार के बारे में कही गई थी.
पुराने समय में,
जो जानवरों के राजा शेर के दोस्त थे.
और उन्होंने,
कम से कम एक समय के लिए,
भोजन साझा करने का निर्णय किया.

ऐसा हुआ कि तीन दिन, और
तीन रात में,
हर शिकार व्यर्थ था-
उन्होंने कोशिश नहीं छोड़ी.
भोर में वे भाग्यशाली थे-
एक छोटी सी झाड़ी में,
एक बकरी और एक खरगोश
और एक अच्छी मोटी मुर्गी पकड़ी,

अब शेर की भूख का कोई ठिकाना नहीं था-
भेड़िये से उसने कहा:
“तुम बंटवारे का तरीका बताओ,
चलो हम खाते हैं.
या हमारा रात का खाना,
ठंडा होना शुरू हो जाएगा!"
परन्तु भेडिय़ा,
भेड़िया नासमझ था.

"हे हमारे प्रभुसत्ताधारी,"
वह बंटवारे के लिए उठा.
“ईश्वर ने आपके लिए बकरी,
मेरे लिए खरगोश, और
फिर गीदड़ के लिए ऊपर वाले ने
बड़ी मोटी मुर्गी भेजी है"

यह सरासर बेशर्मी है,
शेर ने सोचा,
इस ढीठ भेड़िये को,

एक अच्छे सख्त दबदबे की जरूरत है-
और उसका शक्तिशाली पंजा,
भेड़िये के सिर पर लगा,
तो उसकी दोनों आँखें,
बाहर गिर पड़ीं.
और वह आधा मरा पड़ा रहा.

लेकिन शेर के पास
अभी भी बेचारा सियार था-
और उसने कहा:
“निर्णय अब आप पर है
आगे बढ़ो,
दिखाओ कि तुम कितने चतुर हो,
साहसी बनो !
बंटवारे लिए आप एक मास्टर हैं,
ऐसा मुझे बताया गया है!"

अब, सियार ने देख लिया था, कि
भेड़िया कैसे चपटा हो गया है;

शेर की पैंतरेबाज़ी,
उसकी समझ में थी.

"यह हमारे खून में है
जब से दुनिया बनाई गई थी-
फिर भी, मेरे भगवान,
आपने पहले सहायता के लिए,
एक मूर्ख की ओर रुख किया."

"मैं इस तरह के कौशल
और कला के साथ साझा करूंगा-
कि जब तक निर्णय का दिन न आए,
आप कहेंगे 'कितना होशियार' !"
"हे वन राजा,
खरगोश से, आप अपना उपवास तोड़ेंगे,
क्योंकि आपके खाने के लिए
बकरी को रखा जाएगा-
और आखिरी,
"वहाँ मुर्गी है,

शक्तिशाली शेर, और मेरे विचार में
यह आपके लिए सुबह का
एक अच्छा नाश्ता बना देगा"

शेर ने कहा:
"मैं अवाक हूँ तुम सच में होशियार हो,
लेकिन आपको ऐसा करना किसने सिखाया,
और ऐसी कला के साथ ?"
सियार ने कहा
"इस कला में मुझे
परिष्कृत नहीं किया गया था-
लेकिन मैंने अपने भाई से
काफी जल्दी सीख ली,
जो अब अंधा है ?"

मेरे मित्र,

तुम कितने प्यारे हो !
तुम कहीं दूसरी प्रदेश से हो,
और मैं यहां का.
हमारी भाषा वही है,
हमारी वेशभूषा, और भोजन दोनों एक जैसे हैं.
मैं कवि हूँ, और तुम बुद्धिजीवी.
तुम कहीं दूसरी प्रदेश से हो,
और मैं यहां का.
नेकदिल और ईमानदार दोनों,
तुम मुझे कितने प्यारे हो.
इतने कोमल और संवेदनशील मत बनो,
तुम्हारा यह कोमल हृदय,
तुम्हें जल्दी बूढ़ा कर देगा.
तुम्हारी दृढ़ता, मेरे लिए एक आदर्श है.
रविन्द्र, तुम्हें कभी नहीं भूलेगा.
दोनों नेक और ईमानदार,
मेरे मित्र, तुम मुझे कितने प्यारे हो !

आशाहीन प्रेम

इस चांदनी रात में,
आसमान में जितने तारे हैं,
तेरी आँखों के चाकुओं से, उतने
मेरे सीने में घाव हैं.
न आकाश का तारा,
न कोई आकाशीय पिंड तुम हो.
फिर भी तुमने हमेशा,
मेरी आँखों को आकर्षित किया,
मेरे प्यार को मैं छिपा नहीं सकता,
मेरा जीवन बोझ बन गया है,
एक उदास, शाश्वत रात,
इतनी मीठी पीड़ा का शिकार.
क्या मैं आहें भर सकता हूँ ?
मैं जीवित हूँ,
लेकिन मेरे जीवन में,
तुम्हारे लिए आशाहीन प्रेम ने,
जहर घोल दिया है.

मेरी आंखें एक ऐसे फव्वारे
की तरह हो गई हैं,
जो कभी सूखता नहीं है.
इस दर्दनाक कविता को
प्यार करने वाले रवि ने लिखा है.
देखो कैसे,
प्यार से पीटा गया,
धीरे-धीरे वह मर रहा है !

किसान भाई

विलाप मत करो,
मत रोओ.
दिखावा मत करो कि तुम दुखी हो.
किसान भाई !
तुम बूढ़े, धूर्त लोमड़ी,
तुम हमें झपकी लेते हुए नहीं पकड़ोगे.
हल चलाने वाले !
अब तुम ट्रेक्टर चलने लगे हो.
तुम किसी न किसी बहाने से,
रोज मेरे द्वार पर खड़े हो.
भीख मत मांगो,
मुझसे मत पूछो,
मेरे दरवाजे पर अपना हाथ मत बढ़ाओ.
मैं तुम्हारी पूरी सेना को,
अपने दरवाजे पर देखकर बीमार हूँ !
विचारों को मत समझो,
मेरा धैर्य मत तोड़ो,

किसान भाई !

गूंगा बनो, और मेरी बात मानो.

जबकि मैं दयालु हूँ.

अगर इस साल,

किसानों को कोई लाभ नहीं हुआ,

तो मुझे क्या परवाह है ?

अगर बारिश नहीं होती,

और अनाज की फसल नहीं होती,

तो मुझे क्या परवाह है ?

अगर सूखे ने,

चावल और जौ को फिर से खराब कर दिया,

तो मुझे क्या परवाह है ?

अगर पिछले साल,

आपके एक जमीन के टुकड़े से,

आपका कर्ज चुकाया गया,

तो मुझे क्या परवाह है ?

अब अपना पूरा खेत बेचने के लिए

बाजार में ले जाओ.

किसान भाई !

गूंगा बनो, और आज्ञा मानो.
सहायता के लिए चिल्लाओ मत,
यह समझाने की कोशिश मत करो,
कि तुम भूख से मर रहे हो.
मनहूस !
तुम मुझे कभी राजी नहीं कर सकोगे,
इसलिए कोशिश करने का
कोई फायदा नहीं है,
नीच ! भुगतान करें
कि आप क्या कर रहे हैं.
मुझे मत बताओ, कि
तुम नीच नहीं हो सकते!
मेरे लिए जौ और गेहूँ, और चावल,
ले आओ,
या मैं तुम्हारी खाल
एक झटके में उतार दूँगा.
हल चलाने वाले !
किसान भाई !

जीवन इतना आसान होता

जिंदगी कितनी आसान होती !
काश हम सच ही कह पाते,
कि सभी चीजें काफी सुचारू हैं,
और अपना भविष्य बनाने में,
हम व्यस्त हैं.
जीवन इतना आसान होता.
अगर झूठ ने हमें घेर नहीं लिया होता,
देशद्रोही और लुटेरे हमारे आसपास नहीं होते,
चापलूस हमारे सच्चे रास्ते से दूर रहते,
जीवन कितना आसान होता.
अगर मातृभूमि हमारी मंजिल होती
तो बहादुर दिल, देश के होते,
हर तरफ सद्भावना रहती.
ज़िंदगी कितनी आसान होती.
अगर हम बाहरी सुंदरता को बुरा मानते,
और भाग्य ने हमें,
पागल नहीं बनाया होता.

परिवर्तन

प्रगति और प्रकृति का नियम,
परिवर्तन !
एक गर्मियों की शाम,
मैं प्राचीन विजय स्तंभ की
पहाड़ी पर एक घंटे के लिए चला.
मैंने एक-एक करके,
पुरानी लड़ाइयों का सर्वेक्षण किया.
डूबते सूरज में, मीनार और दीवारें,
और मेरे दिमाग में असामान्य विचार उठे.
दुनिया हमारे जैसी है.
मैंने खुद से कहा,
वह पैदा होता है,
रहता है,
बच्चे पैदा करता है.
विकसित होता है,
बूढ़ा होता है,
फिर मर जाता है.

खंडहरों को बेजान और ठंडा छोड़ देता है.
जहां उल्लू, चमगादड़ का ठिकाना.
प्रेरणादायी विस्मय,
सभी जीवन के मूल में एक ही नियम है.
सभी का जन्म होता है,
विकास होता है,
और फिर क्षय होता है.
यह वह सिद्धांत है,
जिस पर सारी प्रकृति आधारित है.
परिवर्तन प्रगति का आधार है.
अगर नहीं होता तो
जीवन का विकास नहीं होता.
शुरू नहीं होता.
यह कानून अनंत दायरे का है.
परिवर्तन से ही विकास जारी रहता है.
सभी संतान पैदा करने,
और जाने के लिए पैदा होते हैं.
प्रकृति एक सबक सिखाती है,
जिसे सभी को जानना चाहिए.

नवीनीकरण, एक राष्ट्र के जीवन को
लम्बा खींचता है.
यह सृष्टि के
आरंभिक दिनों से ही सच था.
सभी एक राज्य से दूसरे राज्य में जाते हैं.
कहाँ है प्राचीन भारतीय- कला
और संस्कृति की जननी ?
पुराने नवीनीकरण की प्रगति कहां है ?
इस तरह के कितने स्तंभ,
खंडहर में पड़े हैं.
नई मूर्तियों और चित्रों के साथ.
नए स्तंभों द्वारा प्रतिस्थापित.
समय ने उन्हें,
और लाखों लोगों ने, नष्ट कर दिया है.
अपने पीछे कुछ भी नहीं छोड़ा है.
और ऐसा हुआ, कि वे गतिहीन थे,
क्योंकि उन्होंने सुधार नहीं किया.
स्थिर हो गए,
पुराने विश्वासों से,

अपने मार्ग पर भटके हुए,
वे सभी ऐसे गायब हो गए,
जैसे कभी पैदा ही नहीं हुए.
अब बताओ,
क्या नहीं बदलता ?
पौधों और जानवरों में परिवर्तन होते हैं.
फिर हमारे विचारों में
कोई परिवर्तन क्यों नहीं होना चाहिए ?
यह सच है,
इतिहास भी साबित कर सकता है.
स्थिर राष्ट्र पृथ्वी के,
नक्शे से मिटा दिए गए हैं.

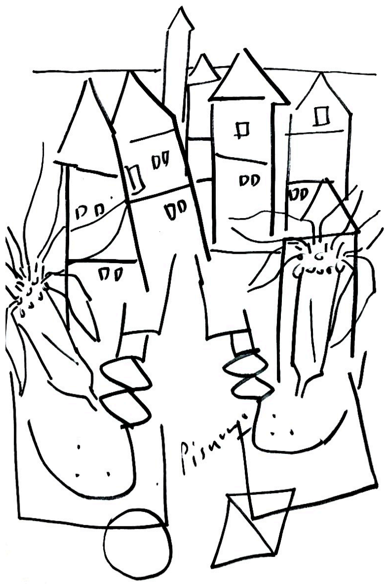

स्पष्ट मार्ग

आपके पास ज्ञान और सोच
का विचार होना चाहिए.
आपको कैसा व्यवहार करना है,
आपको पता होना चाहिए.
शिष्टता, विद्वता
आपके अंदर होनी चाहिए,
अपने अंदर के शैतान को,
कुचलने के लिए.
आपको तलाश करनी चाहिए.
लोगों के साथ,
सच्चाई के बारे में बोलना सीखें.
ईमानदार, सच्चे,
आज्ञाकारी और नम्र बनो.
उन सभी लोगों का सम्मान,
आपके पास होना चाहिए.
हालांकि,
अजनबियों से आपको,

एक नियम के रूप में,

सावधान रहना चाहिए.

समय का उचित प्रयोग कर

प्रगति की ओर अग्रसर होना चाहिए.

सच्चा दिल और सम्मान,

आपके पास होनी चाहिए.

देवदूत आपके लिए,

सुनिश्चित स्वर्ग आरक्षित करेगा.

आपकी दृष्टि, दृढ़ और शुद्ध,

दोनों होनी चाहिए.

आपके सामने,

एक मार्ग स्पष्ट होना चाहिए.

मेरी प्रेयसी

हे मेरे शरीर की ताकत !
मेरी आंखों की रोशनी,
मैं तुम्हारे साथ प्यार में हूँ.
मेरे संकटों का स्रोत,
मेरी प्रेयसी !
मैं तेरी सारी विपत्तियाँ
अपने ऊपर ले लूँगा.
आपके कंधों के नीचे के बाल,
कैसे लहराते हैं.
मेरी प्रेयसी !
आह, तुम्हारी सुंदरता
मैं तुम्हारे लिए,
कितना तरसता हूँ.
तुम मुझे कैसे प्रताड़ित करती हो.
प्रिय! मुझे बताओ कि कौन सी दवा है
जो मुझे स्वस्थ कर देगी.
मुझे ठीक करने के लिए.

मैं पीड़ित हूँ,

भगवान जान ता है, **मेरी प्रेयसी** !

मुझे न धन चाहिए,

न महल,

मैं तुम्हारे होठों के मीठे शहद से

संतुष्ट हो जाऊंगा.

तुम्हारी बुद्धि,

तुम्हारी पूर्णता,

और तुम्हारी मुस्कान.

इतनी धूप,

तुम्हारी **सुंदर** ठुड्डी,

तुम्हारा चेहरा गुलाब की तरह है.

मेरी प्रेयसी !

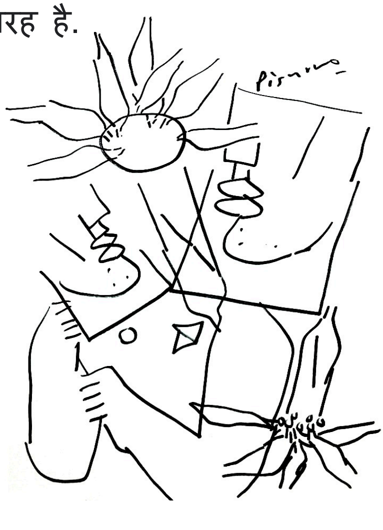

अज्ञानी वास्तुकार

रुको, रुको, तुम अज्ञानी वास्तुकार,
भवन और कमरे सब तिरछे हैं.
क्योंकि तुम्हारे हाथ,
आंख, कान, सिर और पैर टेढ़े हैं.
जब निर्माण की बात आती है.
तो आप इतने अकुशल वास्तुकार होते हैं.

गरीबों की झोपड़पट्टी तोड़ने के लिए,
जब आप नष्ट करने,
और तोड़ने की बात करते हैं,
तो आप बहुत कुशल होते हैं.
वास्तुकला के लिए एक परीक्षा थी,
और यह आपको निर्भीक बनाती है.

एक संयोग आपको इस मुकाम तक ले आया,
अन्यथा, आपके पास न तो पर्याप्त ज्ञान था
ना चेतना, न ही कौशल.

सर्वोच्च पद के लिए प्रयास करने से,
आप इतना अहंकारी हो गए हैं.
इसे ढूंढ़ते हुए,
तुमने गलत रास्ता अपनाया,
आपने अपने आपको नष्ट कर दिया,
तोड़ दिया, ओर लूट लिया.

वास्तुकला में बने रहने के लिए,
आपने जो नीति अपनाई, वह गलत है.
हर कदम पर, हज़ारों विपत्तियाँ डालीं.
बेचारे गरीबों की आहें लगेंगी तुम्हें.
समय बताएगा, कि आपने क्या किया है.
हमारे देश में शोक की, इतनी सारी आवाजें सुनकर,
कोई भी बहरा हो सकता है.
अज्ञानी, जिद्दी लोगों के पास
न तो दिल होता है, और न ही विवेक.
जाहिर है, खाली ढोल की थाप,
अधिक जोर से गरजती है.

व्लादिमीर पुतिन को समर्पित

मैंने इतिहास के सभी कालखंडों का
अध्ययन किया है.
बहुत दूर और आधुनिक
हर खूनी राज्य,
हर जनजाति.
ऐसा बर्बर कातिल,
मुझे कहीं नहीं मिला.
तुमने पूरी तरह से मिटा दिए,
देश के सब ज्ञानी सपूत.

विराम दो !
बहुत हो गया, अज्ञानी नशे में.
तानाशाही की भी सीमा होती है.
खड्डे के ऊपर से नहीं कूदना चाहिए.
इसमें एक पुल भी है.
ऐसा अहंकार
किसी राजा में नहीं देखा गया है.

उस देश के लोगों के खून भरे आंसू,
आपके लिए खुशी लाते हैं.
अज्ञानता और सतहीपन,
हठ और हठ का परिणाम है.
धूसर लहरें ही तटों तक आती हैं.

अरे तुम,
चील, उल्लू,
तुमने बाज़ बनने की
इतनी कोशिश की.
तुम इतिहास में
अपना नाम छोड़ना चाहते थे.
अपने खाली दिमाग से,
आपका हर कदम,
आपकी हर हरकत ने
यह साबित कर दिया.
क्या तुमने कभी,
किसी को जाना है, कि
वह अपने खेत में काँटे लगाए.

ये हरा-भरा मैदान,
ये तड़पती मंजिल,
अनाथों की आहों से
आंसुओं से सींच गई है.
तुम्हारा एक भी दिन
बिना मार काट के नहीं गुजरता,
आप जैसे अहंकारी के लिए
देश या देश का क्या मतलब है ?
टैंक और बम्ब से,
तुम उनकी दुनिया को,
तबाह कर रहे हो,
भगवान तुम्हें कभी माफ़ नहीं करेंगे.

हम भूल जाते हैं

कभी-कभी वो जगहें, जो
कभी देखी होंगी.
और वो महिला जिससे,
कभी प्यार करते थे.
यादों में खो गए हैं.
और कभी-कभी उन्हें,
भुला भी दिया जाता है.
कभी-कभी दिन होते हैं,
जब अपने बच्चों को भी भूल जाते हैं.
और कभी-कभी,
ऐसा दिन होता है जब
पूरी तरह से भूल जाते हैं.
मृत्यु और स्वयं भगवान को भी.
लेकिन तीन चीजें हैं,
जिन्हें एक पल के लिए भी
भुलाया नहीं जाता.
आज, पृथ्वी और तुम.

कोई अप्सरा नहीं मिली

इतने लंबे समय तक,
मैंने एक सौंदर्य की मूर्ति का,
सपना देखा - एक अप्सरा का.
इतनी देर तक,
मैंने अपने सपनों में,
एक प्यारी सी छवि बनाई.
मैं फूलों से रंग चुने,
उसके गालों और होठों के लिए.
सच कहूँ, तो वो अप्सरा,
जिसकी मैं कल्पना कर रहा था,
मेरे दिल के बहुत करीब,
और मूल निवासी थी.
मैंने उसकी छवि को,
अपने दिल के तल में चित्रित किया.
मैं उससे प्यार करता था.
और मेरे प्यार से,
उसके लिए मोमबत्ती की तरह पिघल गया.

समय-समय पर, जब
वो मेरे ख्वाबों में फिर दिखेगी,
मेरे सामने,
एक जीवंत सच्चाई कांप उठेगी.
वह प्रकाश से बने हाथ को लहराती,
और कहती है,
"जाओ और इस सत्य को खोजो,
और तुम इसे पाओगे."
भटकते मजनू की तरह,
मैं जगह-जगह घूमता रहा.
मैंने पत्थरों,
पहाड़ों और जमीनों पर,
अपनी खोज को तलाशता रहा.
मैंने दुनिया भर में,
कई कला प्रदर्शनियों का अवलोकन किया,
लेकिन वह जीवंत सत्य,
कहीं नहीं मिला.
हर बार मैंने, जब
एक खूबसूरत लड़की को देखा,

मुझे लगा कि शायद वह,
मुझे मेरे सपनों की,
उस छवि तक पहुंचाएगी.
मैं दिन और महीने गिनता रहा.
रात में सितारों के साथ,
महीने, साल बीत गए.
लेकिन कोई अप्सरा नहीं मिली.
मेरे सपनों की छवि को,
मूर्त रूप देने के लिए.
"शायद भगवान ने उसे
अभी तक बनाया ही नहीं है,"
मैंने कहा.
लेकिन, फिर भी,
वह सदैव मेरे हृदय में,
सूर्य की तरह चमकेगी.

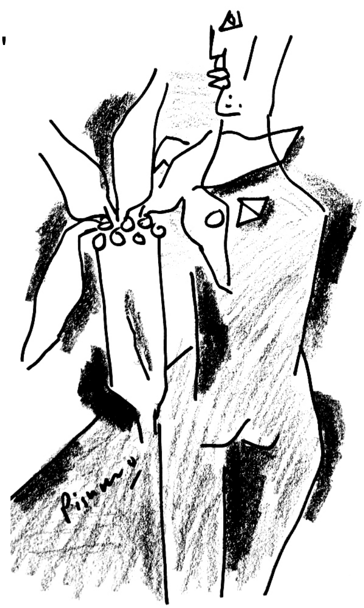

क्या होता अगर ?

क्या होता अगर,
यह धरती की इकलौती गली होती ?
क्या होता अगर, इसके अलावा दुनिया में,
और कोई खिड़की न होती ?
क्या हुआ अगर,
हमारे पड़ोसी के कुत्ते के अलावा,
दुनिया में कोई और कुत्ता भौंक न सके ?
क्या हुआ अगर,
इस दिये की रोशनी ही, सिर्फ रोशनी होती.
और इस सिगरेट का धुआँ,
धरती पर एक ही धुआँ होता.
क्या होता अगर,
आज रात,
मेरे सिवा दुनिया में,
कोई और कवि न होता ?
क्या होता अगर, इस दुनिया में,
न जीत होती और न हार.

कैसे छोड़ दिया जाए

इस महान दुनिया को,
कैसे छोड़ दिया जाए ?
यह समय के साथ.
और अधिक सुंदर होती जा रही है.
अपने मित्रों से जुदा कैसे हों जायें,
सदा के लिए.
धरती और आकाश के साथ,
संघर्ष करने के लिए.
सुबह होने पर ओस मत बनो,
सूरज की तरह चमको.
ऐ दिल, इस नयी सुबह पर,
कैसे इस दुनिया से खुद को,
दूर कर सकता हूँ.
और मित्र
कैसे छोड़ दिया जाए ?
भावना को कैसे त्यागें,
इस नजारे को कैसे छोड़ें.

यह प्यारा सपना,
जीवन के साथ जो एक अंतहीन,
स्थायी लड़ाई है, रक्त और हृदय में.
जलती हुई लपटों के साथ,
सूर्य और चंद्रमा के साथ,
सुबह और रात के साथ,
और आकाश के विशाल गुंबद के साथ,
कैसे छोड़ दिया जाए ?
मेरी आंखों के सामने,
मेरा पोषित प्यार प्रकट होता है.
मुझे मेरी काव्य कला की लौ,
महसूस होती है,
मेरी जलती हुई छाती को,
आहों के साथ,
खुद को शांत करना चाहिए.
उसके मीठे **सपनों के साथ** का साथ,
कैसे छोड़ दिया जाए ?
जुदा कैसे हों ?
नई भावनाओं के साथ,

आप अपने गायन को स्वर दें.

मेरी युवा कलम,

अब बस शुरू होने वाली है.

हे मित्रो, मेरे तीव्र दर्द का उत्तर दो.

इस भीषण आग की ज्वाला के साथ,

कैसे भागा जाए?

इस प्यारी सी दुनिया को,

कैसे छोड़ दिया जाए ?

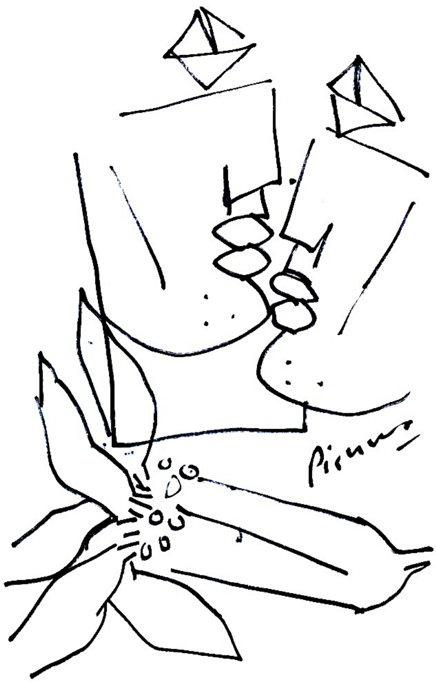

प्रकृति कितनी समृद्ध है

रवि,
जो गहरे नीले आसमान के शीर्ष पर,
रहस्योद्घाटन करता है.
उधर देखो,
आसमान बढ़ता हुआ प्रकाश प्रतीत होता है.
भोर के तारे के नीचे मिले हैं,
उस टिमटिमाते उज्ज्वल भोर का साथ.
चन्द्रमाँ
शुद्ध चांदी की डली की तरह,
दूर तक चमक रहा है.
प्रकृति कितनी समृद्ध है.

कितनी रहस्यमयी भी,
जब आप उसके रहस्यों का खुलासा करते हैं.
नया एहसास खदानों में,
पत्थरों से जुड़ा हुआ है.
यहाँ ऊँचे ऊँचे, ऊँचे ऊँचे पहाड़ हैं.

जहाँ ऊँचे पहाड़ घूमते प्रतीत होते हैं,
वहाँ, तीतर प्रजनन करते हैं.
और झरने दर्पण जैसे चमकते हैं.
कोकिला, उद्यान मेला, खिले हुए.
सितारे प्रत्येक पोषित विचार की मोमबत्तियाँ हैं.
बादल-सपना कारवां,
जो मेरे दिल को हिलाते हैं.
आकाशीय क्षेत्र,
मेरी भावनाओं का हवादार बंदरगाह है.
इस विशाल नीले आकाश का साथ,
कोकिला गुलाब के पास खुश है,
हालांकि पतझड़ आता है.
यह विदा होने के लिए रहता है.
जीवन, जीवन!
लालसा का यह रोना सदा बढ़ता है.
प्यार से, जलते हुए जोश के साथ.

देश के युवा

मैं युवाओं में विश्वास करता हूँ.
अगर तुम चाहो तो, मेरे दिल को तोड़ो.
तोड़ो, और चाहो तो,
इसको टुकड़े-टुकड़े कर दो.
लेकिन इस जीवन से संघर्ष के लिए,
मेरे पास अभी भी एक अटूट आत्मा है.
मौत बनो, और हर पल मेरे सिर के चारों ओर
चक्कर लगाओ, फिर भी,
एक दिन तुम्हारे खिलाफ,
एक और विद्रोह पैदा होगा.
क्या आपको अच्छा लगा,
जब मैंने थोड़ी देर के लिए,
अपनी चुप्पी साध ली ?
मैं हार नहीं मान सकता हूँ.
मेरा भारत महान है.
जिसकी छाती पर मैं पैदा हुआ,
और अपना पहला कदम उठाया.

मेरी रगों में बहता लहू,
आपको समर्पित है.
मेरे दोस्तों, मेरा प्यार शाश्वत है.
मेरे दिल की, इस मनमोहक सुंदरता को
कौन चुरा सकता है ?
कोई शक्ति नहीं है,
जो मेरे दिल की मंशा को,
नष्ट कर सकती है.
क्योंकि,
मुझे मोक्ष के उस दिन में विश्वास है.
ध्यान मत दो.
मैं अंदर से घायल हूँ.
मेरे तूफानी यौवन को गुजरने दो.
मुझे पता है कि,
मुझे बदनाम नहीं किया जाएगा,
मुझे अपने देश के,
युवाओं में आशा और विश्वास है.

मैं अलग हूँ

मुझे फूलों से बहुत प्यार है.
मैं फूलों को बहुत प्यार से देखता हूँ.
मैं घास के मैदान से बहुत दूर हूँ.
मैं फूलों को छू नहीं सकता.
मैं निर्वासित हूँ,
मैं कमजोर हूँ,
अपनों से दूर हूँ,
अलग हूँ,
मैं रोता हूँ.
मेरे आंसू सूख जाते हैं.
मुझे तब तक दर्द होता है,
जब तक मैं तुम्हारे लिए,
अपना रास्ता नहीं खोज लेता.
मैं मोतियों से भी कोमल
कविता लिखता हूँ.
मैं खुद नहीं हूँ,
मैं अपने शरीर से अलग हो गया हूँ.

मैं एक निर्वासन हूँ;
मैं कमजोर हूँ,
अपनों से दूर हूँ,
अलग हूँ.
मैं अपनों के लिए तरस रहा हूँ.
उनकी मीठी बोली,
और मुस्कुराते चेहरों के लिए,
मैं घास की भूमि से बहुत दूर हूँ,
मैं उन फूलों को छू नहीं सकता
मैं एक निर्वासन हूँ;
मैं कमजोर हूँ,
अपनों से दूर हूँ,
अलग हूँ

पुल

पुल लकड़ी का हो सकता है,
और कुछ पत्थर बनाए जाते हैं.
स्टील का भी उपयोग,
पुल बनाने के लिए किया जाता है.
जो सबसे मजबूत है.
सबसे मजबूत पुल धातु से बनाते हैं.
एक पुल स्मारक,
राजसी, गर्व और लंबा हो सकता है.
कुछ पुल नदियों को पार करते हैं,
अन्य नीले रंग की लहरों को पार करते हैं.
इच्छाओं के साथ भी,
कुछ लोग ख्याली पुलों का निर्माण करते हैं.
उम्मीद करते हैं, कि सपने सच होंगे.
पूरे दिल से,
मैं उन पुलों से प्यार करता हूँ.
जो सपनों के आदर्श हैं.
हम उन्हें साहसपूर्वक पार करते हैं.

यह जानकर, कि

जीवन नई संभावनाएं प्रकट करेगा.

एक और पुल,

जिसे आप पास होने पर भी,

देख नहीं सकते,

और फिर भी वह पुल

आपके लिए बना है,

इसलिए, इसे बिना किसी डर के पार करें.

वह सेतु शुद्धतम प्रेम पर बना है,

जो हृदय से निकलता है.

प्रचंड तूफानों के बीच भी,

यह स्थिर रहता है.

और इसे तोड़ा नहीं जा सकता.

सबसे कठोर परीक्षणों को,

यह उत्तीर्ण करेगा.

उस पर जो निन्दा की जाती है,

वह उसे नीचे नहीं लाता,

अच्छाई का सेतु.

प्रेम की आधारशिला पर टिका है.

सच के स्तंभ इसके नीचे हैं.
ऊपर के आदमी के लिए सम्मान है.
और हर कोई जो खुशियों को पार करता है,
उसे पता चलेगा, कि
नई संभावनाएं खुलती हैं,
जबकि उज्ज्वल नए दृश्य चमकते हैं.
इस तरह के पुल,
घनिष्ठ मित्रता लाते हुए,
सभी मानव जाति को प्रिय लगते है.
इसलिए मानव जाति,
हर गुजरते साल के साथ,
ऐसे और पुल बनाती है.
जीवन का प्यार,
आपके लिए इस तरह का ढांचा,
खड़ा कर सकता है.
अपने साथियों के बीच सुनिश्चित करें,
कि आपको सही जगह मिलेगी.

प्रसिद्धि

(जीवनकाल के दौरान)

कोई मेरे दरवाजे पर दस्तक दे रहा है.
"अरे, कौन दस्तक दे रहा है ?"
"मैं स्मृति हूँ
मैं तुम्हारे पहले प्यार से एक पत्र लायी हूँ"
(रसोई में एक नाराज महिला दिखाई देती है,
दस्तक देने वाला व्यक्ति
पत्र के साथ गायब हो जाता है).

फिर से, दरवाजे पर दस्तक
"अरे, कौन दस्तक दे रहा है?"
"मैं स्तुति हूँ !"
"स्वागत!"
"क्या तुम्हारे पास पीने के लिए कुछ है ?"
"नहीं, कुछ नहीं है !"
"तो लिखते जाओ !" (स्तवन पत्ते)
खट खट "तुम कौन हो ?"

"यह मैं हूँ - जरूरत हूँ,
दरवाजा खोलो !"
"क्या ख़बर है ?
मैंने तुम्हें लंबे समय से नहीं देखा है."
"ऐसा लगता है कि तुम
मुझे जितना कम देखते हो,
उतना ही तुम मुझे याद करते हो"
"तुम्हारे पड़ोसी को
पांच वेतन के बराबर वेतन मिलता है.
दूसरा आदमी एक कार खरीदता है."
"भगवान के लिए, मुझे लिखने दो !"

फिर दस्तक, दस्तक.
"कौन है ?"
"तुम्हारा दोस्त, ताजा खबर!"
यह शापित दुनिया ढह नहीं गई है.
हमारी सदी कूटनीति की सदी है,
अरे भाई ! वे जेब में बम लेकर,
शांति की बात करते हैं.

तुम्हारी दो और कविताएँ वहाँ,
तुम्हारे मित्रों के कारण ठुकरा दी गईं.
"मुझे कुछ शांति दो !
मुझे सांस लेने दो !"

फिर से दरवाजे पर दस्तक
"तुम्हें क्या चाहिए ?"
"मैं प्रसिद्धि हूँ!"
"तुम्हारा स्वागत है,
तुम किसे ढूंढ रहे हो ?"
" कवि, रवि "
"भाई, तुम्हें देर हो गई.
वह अब यहाँ नहीं रहता"
"वह अब कहाँ रहता है ?"
पास ही-
शमसान मैं उसकी आत्मा भटक रही होगी.
कुछ मुर्दों को,
अपनी कवितायें सुनाने के लिए.

सफेद हाथी

सफेद हाथी !
मैंने उसे पहली बार
रंगून के चिड़ियाघर में देखा था.
एक रंगीन, लोहे के पिंजरे में.
लोहे के पिंजरे में,
एक अकेला सफेद हाथी.
उसकी आँखें काली थीं,
जैसे उसके नाखून,
लेकिन वह खुद बर्फ-सफेद था.
उसने मेरी ओर इस तरह देखा,
जैसे कि कुछ कहना चाहता हो.

सफेद हाथी बहुत कम मिलता है.
कैद में हाथी शायद ही कभी मिलता है.
उसने एक साल पहले जंगल छोड़ गया था,
और अपने दिल का दर्द
पिंजरे में बर्दाश्त नहीं कर सकता.

और बहुत बार
वह अपनी सूंड उठाता है.
और दहाड़ता है,
आंसू बहाता है,
जैसे अपने मुक्त भाइयों को पुकार कर,
उसकी सहायता करने को कह रहा हो,

वे कहते हैं कि हाथी लंबी उम्र जीते हैं.
सफेद हाथी,
क्या आपको लंबी उम्र चाहिए,
सौ साल तक पिंजरे में कैद ?
सफेद हाथी, सफेद हाथी !

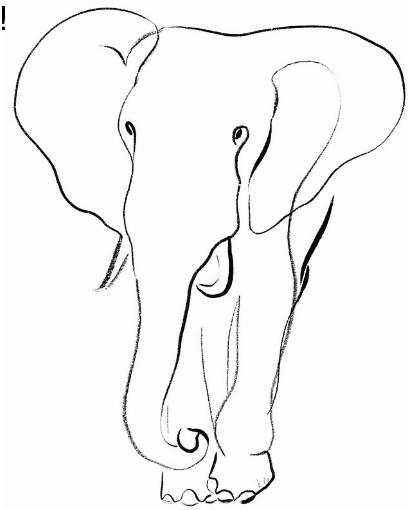

रसोई की दुनिया

अगर मैं एक महिला होता,
तो मेरा लेन-देन सिर्फ,
रसोई के बर्तनों तक ही सीमित होता.

मैं समुंदर के किनारे,
चट्टानों के बीच,
भोर मैं, नहीं मिल पाता.
न समुद्र की स्वच्छ वायु में,
श्वास ले पाता.
मैं नहीं रुक सकता था,
समुद्र तट के अनकहे आनंद में,
मैदानों की हवा के लिए.

इत्मीनान से, शांत रचना नहीं रच पाता,
सुगंधित बगीचों में,
मेरा दिल बहुत दुखता.
इस रसोई की दुनिया में,
आखिर, मेरे अंदर एक कवि मर जाता.

जानेमन को समर्पित कविताएँ हैं,
वसंत के फूलों को,
शरद ऋतु के गिरते पत्तों को,
बिछड़ने की वेदना को,
समर्पित हैं कविताएं.
मिलन की खुशी को,
प्रेयसी के मीठे चेहरे के लिए.

फिर क्यों कोई भी कविता,
रसोई में स्वादिष्ट खाना बनाने वाली,
कुकर से उठने वाली भाप के लिए,
समर्पित नहीं है ?
स्वच्छ पानी में धोए गए,
साफ बर्तनों के बारे में,
कविताएं क्यों नहीं होनी चाहिए ?
कुछ अपने भोजन को,
नमकीन पसंद करते हैं,
अन्य नहीं.
किसी को जैम पसंद है,

किसी को कच्चा टमाटर,
कोई आलू बर्दाश्त नहीं कर सकता,
दूसरे को बिना प्याज या लहसुन का,
खाना पसंद है.
इसलिए
सारा दिन वहीं खड़ा रहना चाहिए.
पोंछना, तलना, पकाना.

किसी के भाग्य में,
ऊँचे पदों पर आसीन होना,
किसी के रसोई में बर्तन धोना.
ठीक है,
कभी-कभी एक साधारण रसोई.
साफ और शुद्ध हो सकती है.

अगर ध्यान नहीं दिया,
जब प्याज गैस चूल्हे पर भूनते हैं,
तो वे राख में बदल जाते हैं.
और खाना बर्बाद हो जाएगा.

लेकिन देखने वाला कौन है,
कि चूल्हे से जलने वाली महिला,
चूल्हे में नहीं बदल जाती ?
महिलाओं की कौन परवाह करता है,
किसका दिल बिल्कुल शांत नहीं है ?
बड़बड़ाओ मत, खाना बनाओ.
ध्यान रहें,
प्याज जलाने की हिम्मत मत करना,
जो रात के खाने को स्वाद, और स्वाद दे !

अगर फूलों का बगीचा,
किसी कविता को प्रेरित कर सकता है.
तो रसोई क्यों नहीं ?
एक फूल के समान,
एक चूल्हा,
और एक घिनौना बर्तन भी,
कला के सिंहासन पर चढ़ सकता है.
काव्य विषय अनगिनत हैं.
जब तक आप दुनिया को,

कवि की नजरों से देखते हैं.
मैं अपनी रसोई की,
छोटी सी खिड़की से,
साल के चार मौसम देखता हूँ.
गर्मी, सर्दी, वसंत, शरद ऋतु.
मैं उनके असली चेहरे देखता हूँ.
वसंत ऋतु में,
एक लंबा चिनार,
मेरी खिड़की के पास,
धीरे-धीरे कलियों से आच्छादित होता है.
फिर पत्तियाँ दिखाई देती हैं.
और यह हरे रंग के परिधान पहनता है.
हल्की हवा चलती है,
शाखाएँ फुसफुसाती हैं.
वसंत ऋतु में पेड़,
अपनी सारी भव्यता में,
लहराता हुआ खड़ा होता है.
पतझड़ में हवा,
अपनी छाती को फुलाती है.

और शोक के साथ पीली हो जाती है.
फिर सर्दी आती है,
और पेड़ नंगे हो जाते हैं.
मुझे प्रेरित करने के लिए,
और कोई हरियाली नहीं है.
नंगे पेड़, अकेले अपने दुःख के साथ,
अपने **शरीर** को ठंढ और ठंड में छोड़कर,
जीवित रहने की आशा के विरुद्ध,
आशा करते हुए,
वसंत तक.
उदार हृदय से,
अस्तित्व की गहराइयों को,
सुनाने वाले मन के साथ,
आपके सपने नहीं मरेंगे,
आपके विचार फीके नहीं पड़ेंगे,
अगर आपकी आत्मा में कोई दिव्य प्रकाश है,
तो उसे मशाल की तरह थामे रहो.
और अपनी छोटी सी रसोई से,
आप महान दुनिया को देखने में सक्षम होंगे.

मेरी आत्मा की ठंड

यदि तुम प्रकाश होते,
तो मैं तुम्हें घेर लेता.
तुम, मेरे उत्साही प्रिय,
मैं तुम्हारी लौ में जल जाता.
मैं जीवन भर जलता रहता,
यदि तुम मेरी सहायता के लिए नहीं आते.
भले ही तुमने मुझे बारिश में,
ठंडा न किया होता,
मैं तुम्हारी गर्मी,
तुम्हारे धुएं का सामना करता.
मैं एक अचंभा बन गया होता,
और पहरे पर खड़ा होता, जलते हुऐ.
तुम हँसी हो,
लेकिन मैं एक आंसू हूँ.
तुम कहाँ हो, मेरे प्रिय ?
मेरी आत्मा की सर्दी बहुत तूफानी है.
और मैं हंस नहीं सकता.

तुम हँसो, मेरे प्रिय !
जब दुनिया उत्सव के बीच में है,
मेरी आत्मा में यह दुःख क्या है ?
मैं क्या कर सकता हूँ, मैं, इतना बदकिस्मत,
मैं अपना दुख, खुद नहीं समझ सकता.
दुख ने मेरा सिर झुका दिया है.
मैंने अपने प्रिय मित्र को खो दिया है.
मैं अपने आँसू नहीं पोंछ सकता,
जो मेरे चेहरे से नीचे उतर रहे हैं.
मैं रेगिस्तान में उगाया हुआ फूल हूँ.
मैं सूखे मौसमों से भरा साल हूँ.
तुमसे जुदा होकर, मैं मरना चाहता हूँ.
पर ये कैसे नहीं कर सकता हूँ ?
जिधर देखता हूँ,
सब कुछ तेरी याद दिलाता है.
पर तेरी तरफ से कोई खबर नहीं.
अब एकमात्र दोस्त,
जिससे मैं बात कर सकता हूँ,
वह है हमारी यादें.

पत्थर

अर्ध-नग्न, आदम पुरुष !
दुश्मन पर पत्थर मारो,
खून बहाओ.

लेकिन पत्थर,
ज़मीन पर नहीं गिरा.
उड़ता रहा,
क्षितिज से क्षितिज तक.
यह मत सोचो कि पत्थर गायब हो गया.
वह पत्थर तीर में बदल गया,
और फिर तलवार.
एक गोली, एक मिसाइल.
जैसा हमने सोचा था वैसा.
वह नहीं रुका,
यह एक परमाणु में बदल गया.
शिखर भेदी.
वह बह गया...

वो पत्थर अब भी नहीं रुका है.
यह अभी भी हवा में गोली मारता है.
लेकिन कहाँ ?
न्यूट्रॉन हो जाता है.
इलेक्ट्रॉन.
इसमें से बहुत कुछ,
आग में तब्दील हो जाता है.
मौत ज़हर !
आप, मेरे समकालीन,
आप, सत्य के भाई,
बताओ, क्या उस पत्थर को,
रोका नहीं जा सकता,
वो आधा नंगा,
अर्ध-जंगली,
आदम आदमी का इतने समय पहले,
फेंका हुआ पत्थर ?

प्यार

खुबसूरत औरत,
तुम पवित्र जल हो,
मैं आपसे प्यार करता हूँ.
जैसे सख्त सूखे होंठ,
प्यास से जले,
पानी की एक बूंद से प्यार करते हैं.
सुंदर महिला, तुम हल्की हो,
तुम मेरे मन की सुंदरता हो.
मैं तुम्हें एक आँख के रूप में,
प्यार करता हूँ.
अँधेरे में उजाले की,
एक चमक के लिए बेताब है,
लेकिन वह तुमसे प्यार करता है.
आकर्षण के रूप में,
जिसे सभाओं, शादियों में,
रोशनी से बनाया जाता है.
बोलो, आवाज बुलंद करो,
अपनी आवाज को कभी कम न होने दो.

क्योंकि मैं तुम्हें,
एक प्रतिध्वनि के रूप में प्यार करता हूँ.
ध्वनि के रूप में,
ताकत के रूप में,
क्यूँ छुपाना है तुमसे.
कि मैं तुमसे प्यार करता हूँ.
किसी कमरे के,
किसी अँधेरे कोने में,
एक उदास सन्नाटे की तरह.
यह मैं हूँ,
यह तुम हो,
हमें बताओ तुम क्या सोचते हो !
मेरे प्यार पर ध्यान दो,
मेरे पास कहने के लिए,
और शब्द नहीं हैं.

कोरोना

हम दो सालों से मुसीबत में हैं.
कोई स्वास्थ्य नहीं,
कोई ताकत नहीं,
कोई जीवन नहीं.
मुसीबतें कई गुना बढ़ गई हैं,
लेकिन कोई समाधान नहीं.
कोई दवा नहीं,
कोई उपाय नहीं,
कोई इलाज नहीं,
कोई समाधान नहीं,
कोई स्वास्थ्य नहीं,
कोई डॉक्टर नहीं.
न बाग खिलते हैं,
न फूल खिलते हैं.
सुंदर कोकिला को,
गाए हुए बहुत समय हो गया है.
दुखी दिल हमेशा तड़पता है.
कोई लड़ाई नहीं,

कोई लड़ाई का मैदान नहीं,
कोई संगठन नहीं,
कोई विद्रोही नहीं.
ज्यादातर लोग अब
घरों में ही में सड़ते हैं.
अकेलेपन, और तड़प में ज़िंदगी गुज़रती है.
शायद हमें कब्र में आराम पाए.
अगर हम मर गए तो,
कोई आज़ादी नहीं,
कोई आदेश नहीं,
कोई आराम नहीं.

अधीनता - स्वतंत्रता

हमारा देश गुलामी की आग में जल गया.
आजादी की खातिर हम जख्मी हुए.
और झुलस गये.

अब हम स्वतंत्र हैं.
लेकिन उस सम्मान से मुक्त हैं.
जो हमें एक बार बुराई से बचाता था.
अब जबकि हम, शत्रु के
कोप से, मुक्त हो चुके हैं,
हमारा देश, अपनी ही नफरत का
निशाना बन गया है.
दूसरों की गुलामी से आजाद होकर,
हम अपनी गुलामी के आगे झुक गए हैं.

हम उपकार और दया से मुक्त हैं.
हमें राष्ट्र के अधिकार को,
अस्वीकार करना चाहिए.

हम अपनी ही मातृभूमि के
क्रूर लुटेरे बन गए हैं.
धोखे से कोई दूसरा राष्ट्र,
हमारी जगह नहीं ले सकता.
उस पर आरोप लगता है.
दुनिया उस पर आरोप लगाती है.

जब हम अपनी मातृभूमि को लूटते हैं,
हम भगवान के भय से मुक्त होते हैं.
मेरी आजादी,
मेरी दुश्मन है.
भाग्य स्वयं इस गुप्त खेल का,
सिर या पूँछ नहीं बता सकता.
वह रस्सी जिसने मुझे गहरे,
सूखे कुएँ से बाहर निकाला था,
अब मेरे गले में फंदे की तरह लिपटी है.

पूर्व

जिसने कभी दुनिया पर राज किया था.
अब पश्चिम के आदेश पर काम कर रहा है.
हम बीमार हो गए,
और अजनबियों को प्रणाम करते-करते,
थक गए हैं.
लेकिन हम दूसरों की नकल करते नहीं थके.
हमने अपने आप को खो दिया.
हम अपने शुद्ध रक्त को,
दूसरों के साथ मिलाने के कारण,
पहचानने योग्य नहीं रख सके.
ये दुनिया हमें पहचानना नहीं चाहती.
हम खुद को नकल में डूबने देते हैं.
मैं अपनी आवाज से पहचाना जाना चाहता हूँ.
बस एक अपराधी की तरह रहता हूँ.
मैं चाहता हूँ कि,
दुनिया की आंखें मुझे देखें,
जैसा मैं हूँ.
मेरे अच्छे और मेरे बुरे के साथ.

मैं जैसा हूँ वैसा हूँ.
चाहे काला या सफेद.
मैं दूसरों की नकल क्यों करूं ?
मुझे खुद बनना है.
सिर्फ खुद,
अगर मैं खुद नहीं हूँ.
तो मैं कुछ भी नहीं हूँ.

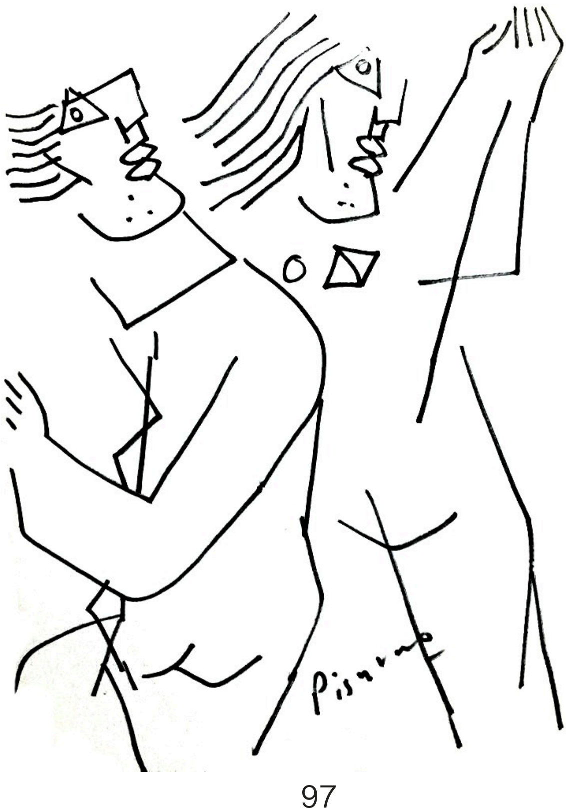

विरोधाभास

मेरा दिल,
और मेरा दिमाग,
विपरीत तरीके से काम करते हैं.
लेकिन दोनों,
मुझे नष्ट करने में लगे हुए हैं.
"प्यार से दूर रहो,"
उनमें से एक कहता है.
दूसरा, सब उस महिला के लिए है,
जिसे मैं प्यार करता हूँ,
दिन और रात.
मेरा तर्क, मेरे दिल से विद्रोह करता है.
जोशीली आग की अधिकता है.
लेकिन कौन सा दिमाग,
दिल की, उस लौ को रोक सकता है.
जो उसमें है ?
तो मेरा दिल भी,
हमेशा प्यार और इच्छा से जलता है.

कोई आनंद नहीं,
कोई और खुशी नहीं है,
जो यह दे सकती है.
तुम्हारा प्यार ही, मुझे खुश कर सकता है.
साबित कर सकता है,
कि मैं जीवित हूँ.
तुम्हारी नज़रें,
दुनिया को प्रकाश से भर देती हैं,
ताकि सभी रहस्य इसमें शामिल हों.
मैं दिव्य हो सकता हूँ,
उस प्रकाश के लिए.
अपनी महान भावनाओं का मैं ऋणी हूँ.
जो मेरे पूरे जीवन को प्रभावित करता है.
निर्मल आनंद के साथ.
मेरे प्यारे सपने,
आसमान से भी ऊंचे उड़ते हैं.

एक उदास कविता

चांदनी आसमान में,
सितारों की तरह,
असंख्य हैं.
तुम्हारी आँखों की तेज रौशनी से,
मेरे सीने में घाव हैं.
आसमान में,
एक तारा नहीं है.
कोई आकाशीय पिंड,
तुम नहीं हो.
फिर भी, तुमने हमेशा
मुझे आकर्षित किया है.
मेरा प्यार,
मैं व्यक्त नहीं कर सकता.
मेरा जीवन बोझ बन गया है.
एक उदास, अनंत रात,
ऐसी मीठी पीड़ा का शिकार,
क्या मैं इस सब से बच सकता हूँ ?

मैं जीवित हूँ,
लेकिन मेरे जीवन में जहर है.
तुम्हारे लिए बेपनाह मोहब्बत है.
मेरी आंखें, कभी न सूखने वाले,
झरने की तरह हो गई हैं.
यह उदास कविता,
बीमार प्रेमी द्वारा लिखी गई है.
देखो कैसे,
अकेलेपन का मारा,
धीरे-धीरे वह मर जाता है.

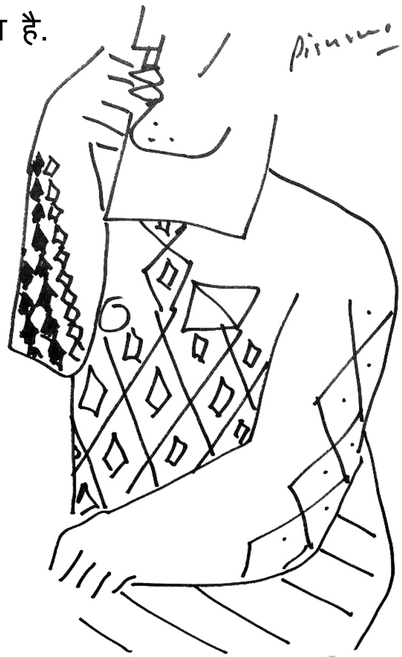

रफ्तार

एक समय था,

हम बैठते थे ट्रेन के डिब्बे में,

दो तीन दिन और रातें.

मीलों की गिनती.

जोधपुर से मद्रास.

साथ आदिया,

सुबह, शाम, दोपहर,

खाने, नाश्ते के लिए.

फिर, हवाई जहाज से,

आठ दस घंटे,

जोधपुर से अहमदाबाद से मद्रास.

और अब सिर्फ दो तीन घंटे.

फिर भी क्षमा करें,

ज्यादा उबा महसूस होता है.

हम उड़ना चाहते हैं,

प्रकाश की गति के साथ.

लेकिन प्रकाश की गति भी,

पकड़ने में बहुत धीमी होती है.
हमारे विचारों की उड़ान.

मैं आधुनिक समय का इंसान हूँ.
अब मुझे दो,
मेरे मन की गति.
मेरे विचारों की गति.
मुझे चिंता करने की नहीं,
मुझे मौत के घाट,
उतारने के लिए नहीं.
अभी,
मेरे मन की गति का,
मिलान करो,
अब चलो !

मेरी इच्छा

मैं चाहता हूँ,
काश, मैं अपना सारा जीवन,
इस पृथ्वी पर बिता पाता.
मेरे मरने के बाद भी,
सूरज की तरह मेरी गर्माहट बनी रहे.
काश, मैं अपना सारा जीवन,
इस पृथ्वी पर बिता पाता.

जब मैं मरूं,
तब मेरा प्यार,
ऊँचे तारे की तरह, चमकना चाहिए.
मेरी निशानी, इस धरती पर बनी रहे.
जैसे इन्द्रधनुष रहता है.
गरज, आंधी और बारिश के बाद.
बादल रहित आकाश में,
काश, मैं अपना सारा जीवन,
इस पृथ्वी पर बिता पाता.

हर पार्थिव फूल की सुगंध में,
सांस लेने के लिए.
ताकि मेरे जाने के बाद,
प्रकृति माँ, अपनी मुस्कान बनाए रखे.
मनुष्य को अपने कर्मों
या वचनों से,
कभी किसी को दुख नहीं देना चाहिए.
काश, मैं अपना सारा जीवन,
इस पृथ्वी पर बिता पाता.

मेरी सांस,
पंछियों के गीतों में रहे.
मेरी ख्वाहिशें,
दिन के उजाले में खिलें,
सूरज की तेज रोशनी में,
फलता-फूलता और खिलता हुआ.
काश, मैं इस पृथ्वी पर,
इस तरह से रह पाता.

दुःख और आनंद में,
सभी को याद करने के लिए.
जब प्यार का बोलबाला हो,
तो प्रेमी मुझे याद करें.
बच्चों के सपनों में,
मुझे भी जीवित रहना चाहिए.
और जीना चाहिए.
काश, मैं अपना सारा जीवन,
इस पृथ्वी पर बिता पाता.

ताकि फूलों की सुगंध,
और ताजगी,
मेरी आत्मा को शांति दे.
फूल जब,
वसंत ऋतु में खिलते हैं,
तो वे मुझसे फुसफुसाते हैं.
जब सुबह की
पहली किरण निकलती है,
तो मैं जीवित हो जाता हूँ.

मेरे सपने, दूसरे दिलों में,
उनके जीवन मैं खिलें.
काश, मैं अपना सारा जीवन,
इस पृथ्वी पर बिता पाता.

हर चांदनी रात में,
मेरी आत्मा,
पृथ्वी पर उतरे.
मेरी इच्छाएं,
मेरे सपने, और मेरे विचार,
अपने जीवन को जारी रखें.
काश, मैं अपना सारा जीवन,
इस पृथ्वी पर बिता पाता.

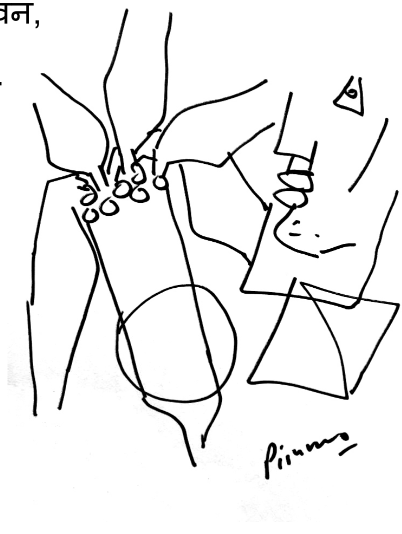

श्रद्धांजलि से क्या होगा

हालाँकि ......
मशाल अनंत,
स्मारक-ग्रेनाइट,
इतने बुरे नहीं हैं !
संगमरमर की पटिया की कब्र,
एक क़ब्र का पत्थर,
साहब,
उपमा के साथ- इतने बुरे नहीं हैं !

श्रद्धांजलि !
कब्र के किनारे भाषण,
सांत्वना,
अनंत विज्ञापन ...
अभी भी खराब नहीं हैं !
सेवा दफन,
और पट्टिका स्मारक,
सहानुभूति विज्ञापन-

इतने बुरे नहीं हैं !
और न होना चाहिए !
हर मृतक के पास उतना नहीं होता,
कुछ कम से कम,
कुछ हद से ज्यादा हो जाएंगे.
हालाँकि,
बेहतर होगा,
जीने वालों का सम्मान कर,
थोड़ी सी तारीफ दे दो.
जबकि अभी भी समय है.
ज्यादा गर्म,
अनंत मशाल से ज्यादा फिट,
और स्मारक-ग्रेनाइट से,
कहीं अधिक उदात्त.

मेरे सपने

हम दोनों की बस,
आपको घर ले जाती है.
मेरे सपने मुझे ले जाते हैं.
सपने - क्या वे सच होंगे ?

सीट नरम है,
जितना नरम हो सकती है.
सीधी सड़कें जो आप देखते हैं,
सड़क चिकनी है,
राजमार्ग मुक्त है.
लेकिन उबड़-खाबड़ रास्ता,
मेरा सामना कर रहा है.
हम दोनों गाड़ी चलाते हैं.
तुम घर चला रहे हो, और मैं,
अकेले मेरे सपने.
पैदल चलते है, हम में से एक,
दूसरे की सवारी बस में.

आपकी मंजिल - यह निकट है,
और तुम्हारे लिए सब कुछ स्पष्ट है.
लेकिन मुझे अभी बहुत दूर जाना है.
और क्या मैं पा लूंगा,
मुझे नहीं पता.
एक घंटे के भीतर,
आप घर पहुंच जाएंगे.
मेरे विचार,
मृत्यु के बीच में,
और शोक घूमेगा.
परिचालक अपनी जगह पर पर बैठा है.
और आप शांत हैं.
आपको डरने की जरूरत नहीं है.
परिचालक, यात्री और सभी,
तुम सब जल्दी घर पहुंच जाओगे.
मैं अपने सपने की तरफ.

जीने का रास्ता

चलो एक रास्ता खोजें.
चलो, जीने का एक रास्ता खोजो,
मेरे प्यारे,
ताकि हम असमय न गुजर जायें.
ताकि हम किसी अप्रत्याशित मौत से,
न टकराएं.
आइए अलगाव के पुलों को,
पार करने का एक तरीका खोजें.
आइए एक रास्ता खोजें,
ताकि हम ईर्ष्या के बहकावे में न आएं.
चलो जीने का एक रास्ता खोजो,
मेरे प्यारे,
ताकि हम किसी और के भरोसे न रहें.
आइए हम अपने लिए एक सुरक्षित,
पनाहगाह बनाएं.
जहां सच्चा प्यार शरण पा सकता है.
और अनावश्यक क्रोध को

ठीक कर सकता है.

चलो जीने का एक रास्ता खोजो.

मेरे प्यारे,

ताकि जब विश्वासघात का जाल,

हमें पकड़ने की कोशिश करे,

तो हमारी ईमानदारी उसे फाड़ दे.

क्या हम इसे कर सकते हैं ?

हाँ हम कर सकते हैं !

बस एक शर्त है,

हमें सीमाओं को हटाना होगा.

"मेरा" और "तुम्हारा" और "उनका" के बीच की.

मेरी वेलेंटाइन

मेरी वेलेंटाइन होने के लिए
धन्यवाद !
आपका प्यार अंधेरी रात में,
एक सुंदर सूर्योदय की तरह है.

एक सुबह की सुंदरता से भरे,
दिन के लिए जागता है.
कल के सभी बोझ हट जाते हैं.
और आपकी शांत,
दयालु उपस्थिति बनी रहती है.
मेरे दिल में आशा लाती है,
जो कुछ भी शुद्ध,
महान और अच्छा है.

आपका प्यार संगीत के,
एक मधुर स्वर की तरह है.
मेरे दिल, मेरे दिमाग,

मेरी आत्मा में नृत्य,
एक अंतहीन स्वर की समता में.
आपका प्यार,
एक शानदार कलात्मक कृति की तरह है.

कालातीत,
अविस्मरणीय,
और हमेशा के लिए पोषित.
अगर मैं आपके चित्र को चित्रित कर सकता,
तो यह गुलाब की सुंदरता,
पवित्रता की सुगंध,
और कोमलता के दिल को दर्शाता.
मेरी वेलेंटाइन होने के लिए
धन्यवाद !

इंसान या मिट्टी

आप नहीं जानते,
इंसान चाहे मिट्टी बन जाए,
या मिट्टी इंसान बन जाए.
आपके यह जानने का कोई फायदा नहीं है.
और आपके जानने या, नहीं जानने से,
कोई फर्क भी नहीं पड़ता है.
जीवन जो कुछ भी देता है,
उसे वापस ले लेता है.
मिट्टी में क्या बचा है ?
लोगों से क्या बचा है ?
अगर वे खुद को नष्ट करते हैं.
तो क्या बचा है ?
अतीत हमेशा खुद को,
अतीत के साथ सांत्वना देता है.
समय चक्र, रास्ते लंबे हो जाते हैं.
भविष्य हमेशा उज्ज्वल रहा है.
सौभाग्य से, दुनिया का एक भविष्य है.

अधूरा काम

एक अधूरा काम, एक अधूरा काम है.
एक सगाई वाला बेटा या बेटी,
बिना शादी के,
एक अधूरा काम है.
बिना फसल के शरद ऋतु,
एक अधूरा काम है.

बिना पुल की सड़क,
बिना सड़क की जमीन,
बिना शब्द की जुबान,
एक अधूरा काम है.
बिना लक्ष्य के किया हुआ कार्य,
अर्थ के बिना अभिशाप है,
प्यार के बिना एक चुंबन,
एक अधूरा काम है.

मेरे हाथ

मैं अपने बिस्तर पर लेटे हुए,
अपने हाथों को,
उत्सुकता से देखता हूँ.
मैं अपने हाथों की,
परेशानी के बारे में,
किससे कह सकता हूँ ?
मेरे हाथ एक पृथ्वी हैं,
एक सही पूंजीवादी है,
दूसरा, साम्यवादी.
मैं हाथ देखता हूँ,
वे कीमती रत्न नहीं हैं,
न ही वे सोना हैं.
ये हाथ ही लिखते हैं,
वे पत्थर तराशते हैं,
और कड़ी मेहनत करते हैं.
वे उतने ही शक्तिशाली हैं,
जितने कि ब्रह्मांडीय शक्ति,
चंद्रमा और मंगल के चारों ओर,

चक्कर लगा रही है.
बृहस्पति के रास्ते में.
इन हाथों ने कभी,
एक चींटी को भी नहीं मारा,
न कभी कुछ चुराया,
न शिकायत की.
लेकिन उन्होंने,
पानी और पृथ्वी दोनों में,
चट्टानों को काट दिया है.

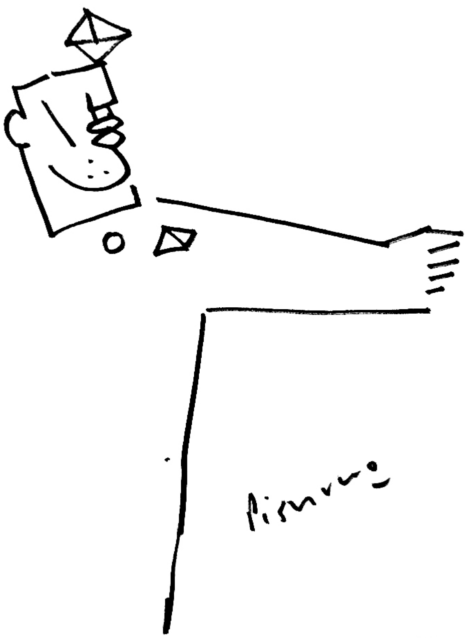

काली आँखों वाली

मैं एक काली आँखों वाली,
लड़की से बात करने के लिए,
बाहर गया था.
उसने कहा,
"तुम्हें जाना होगा",
मैं तुम्हें मेरे पास,
रहने नहीं दे सकती.
बहुत से लोग हमें देख सकते हैं.
संकेतों के साथ हम
बोल नहीं सकते.
यह पलक झपकने का
समय नहीं है !

तुम्हारी सहृदय गर्मी
मेरी घातक दुश्मन है.
हवाएं तुम्हारे बालों को
इधर-उधर कर रही हैं.

यह समय है, कि
हमें चूमना चाहिए.
मैं तुमसे विनती करता हूँ,
मत जाओ.

आओ हम प्यार करें,
कहने को और कुछ नहीं बचा.
रवि कहते हैं, निडर बनो.
ऐसा मौका कभी नहीं चूकते.
चुंबन के लिए भीख मांगते हुए,
उसकी गर्दन के पिछले हिस्से पर.
प्रवचनों में, समय बर्बाद करना,
काफी गलत होगा . . .

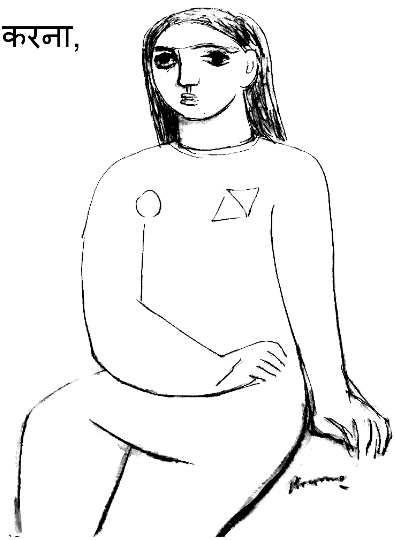

टेलीफोन

टेलीफोन नंबर,
सभी एक जैसे नहीं होते हैं.
हालांकि इन सबके अंत में,
मानवीय आवाजें हैं.
इंसानी आवाजें,
सभी एक जैसी नहीं होतीं.
एक खुशी व्यक्त करता है,
और एक दु:ख.
दुख सब एक जैसे नहीं होते,
एक आशान्वित है,
दूसरा हताश.
उम्मीदें, सब एक जैसी नहीं होती,
एक भगवान पर निर्भर है,
दूसरी, मनुष्य के हाथों में.
मनुष्यों के हाथ,
सब एक जैसे नहीं होते,
एक खेत की जमीन जोतता है,

दूसरा, जीवन को खराब करता है.
मानव जीवन भी,
सब एक जैसे नहीं होते.
एक फलता-फूलता है,
दूसरा, मुश्किल से ही बच पाता है,
इंसान की चाहत भी,
सब एक जैसी नहीं होती.
एक दृढ़ हो जाता है,
दूसरा टुकड़े-टुकड़े हो जाता है.
टुकड़े सब एक जैसे नहीं होते,
एक सदी जितना बड़ा है,
दूसरा एक दिन जितना छोटा है.
दिन सब एक जैसे नहीं होते,
एक अच्छा है, दूसरा बुरा.
बुरे दिन सब एक जैसे नहीं होते,
कभी-कभी तुम चुप रहती हो,
कभी-कभी, टेलीफोन.

पक्षी और कुत्ता

किस रोष के साथ,
यह पक्षी गा रहा है.
यह एक गीत से अधिक,
एक अभिशाप की तरह लगता है.
यह लगभग,
भौंकने लगता है.
यह आधा पक्षी है,
आधा कुत्ता.
पृथ्वी पर कोई नहीं है,
जो इस पक्षी की भाषा
समझता है.
कुत्ते पीछे से भौंकते हैं.
इस भौंकने वाले पक्षी,
की आवाज पर,
क्या रोष का कारण,
यह पक्षी बताता है.
भेड़िये के प्रति द्वेष रखता है.

भौंकने के लिए.
इसे दोष क्यों दें ?
हो सकता है, कि
उसका जीवन,
कुत्ते की तरह दयनीय हो.
भले ही तुम एक पक्षी हो,
उड़ो.
भले ही तुम कुत्ते हो,
भौंको.
इस देश में कौन परवाह करता है.
जहाँ कुत्ते जूते चाट कर,
जीवित रहते हैं,
और पक्षी कुत्तों की तरह
भौंकते हैं.

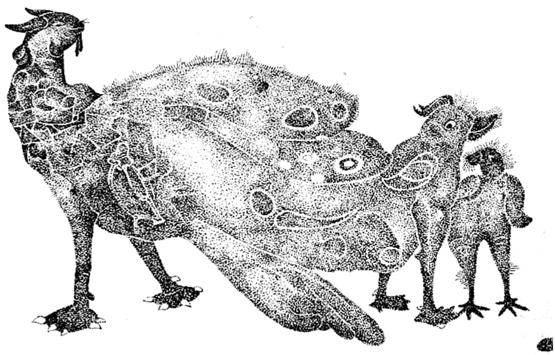

किसी और से ज्यादा

मैं न तो दुनिया का,
सबसे मजबूत आदमी बन सकता हूँ.
और न ही बनना चाहता हूँ.
मैं नहीं चाहता कि,
कोई मुझसे डरे.

मैं दुनिया का,
सबसे धनी व्यक्ति
नहीं हो सकता,
न ही मैं बनना चाहता हूँ.
मेरे लिए,
दुनिया की सबसे बड़ी दौलत,
मुस्कुराते हुए चेहरे और,
आँखों वाला एक छोटा सा तम्बू है.
एक खुले दरवाजे,
और खिड़कियों के साथ.

मैं तुम्हें दुनिया
में किसी और से ज्यादा,
प्यार नहीं कर सकता,
न ही मैं तुमसे,
इतना प्यार करना चाहता हूँ.
क्यूंकि सिर्फ वही,
जो बेशर्मी से प्यार करते हैं,
किसी और से ज्यादा प्यार
का दिखावा करते हैं.
मैं तुम्हें चुपचाप,
और धीरे से प्यार करना चाहता हूँ.

शतरंज

इस दुनिया के
सभी राजाओं में से,
केवल दो राजा बचे हैं.
एक सफेद है
दूसरा, काला.
शतरंज की बिसात पर.
केवल सबसे खराब
दो ही राजा बचे हैं.
इन दोनों की हालत खराब है.
वे नाम के राजा हैं.
लेकिन वे सिर्फ खिलौने हैं.
दो बच्चे,
राजाओं जैसे कपड़े पहने हुए हैं.
वे वही करेंगे,
जो उन्हें बताया जायेगा.
दोनों उनके शूरवीर, महल और सैनिक
सभी को भूल गए हैं.

उन्हें किसानों,
बिल्डरों और गीतकारों के बारे में,
और मरे हुए जवानों का भी पता नहीं.
उनका कौन-सा राजा दोषी है ?
उनके दिमाग में,
यह बात भी नहीं आती कि,
उनके राजाओं का मुखिया,
एक खिलाड़ी की,
दो अंगुलियों के बीच होता है.

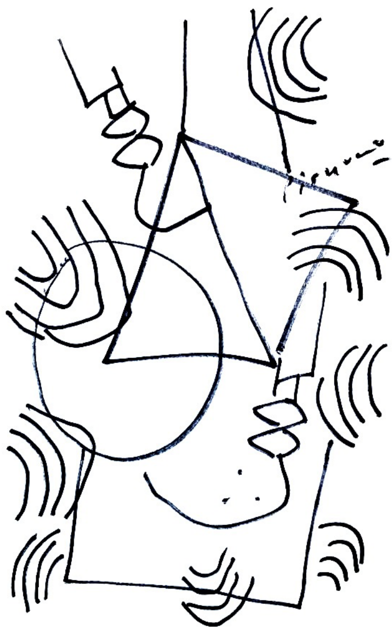

मुझे याद है

जब मैंने अपनी,
प्यारी की पतली गर्दन को
गले लगाया था.
तो प्यार ने मेरी उंगलियों को,
उसके बालों में बंद कर दिया था.
मुझे याद है,
जब मैं उसके सीने पर,
अपना हाथ रखना चाहता था.
उसने एक बटन और खोल दिया.
वह अधीर होकर और पास आई.
मैंने उसकी इच्छा देखी,
हंसते हुए, ताली बजाते हुए,
आकर्षण और आग से भरपूर !
वह मेरे दिल में छिप गई,
सांसारिक पोशाक में एक देवदूत,
उसके मीठे शब्द,
प्यार और साथ मसालेदार बातें,

मुझे याद है.
फिर, आईने मैं देखकर,
स्वयं को निहारा.
उसने अपने बालों में कंघी की,
और उन्हें अपने,
चेहरे के चारों ओर व्यवस्थित किया.
तब वह मेरे पास आई,
और हम गले से लिपट गए.
वह मेरे और करीब आ गई.
मुझे याद है,
कैसे उसकी पलकें फड़फड़ाईं.
और मेरे सीने को छेद दिया.
उसके कपड़ों से,
कस्तूरी की महक उठी,
तब वह चली गई.
और मुझे व्यथित छोड़ गई.
उसने परवाह नहीं की,
लेकिन दिखावा किया,
कि उसने प्यार किया.

मुझे याद है,

मैंने अपनी प्रियतमा के हाथों,

कितना कष्ट सहा.

मेरे सामने,

उनकी दयनीय छवि,

अभी भी कायम है.

फिर भी मुझे संदेह है, कि

वह उसकी क्रूरता को

समझती है.

लेकिन मुझे उसका ज्वलंत दुलार,

कितना स्पष्ट रूप से याद है.

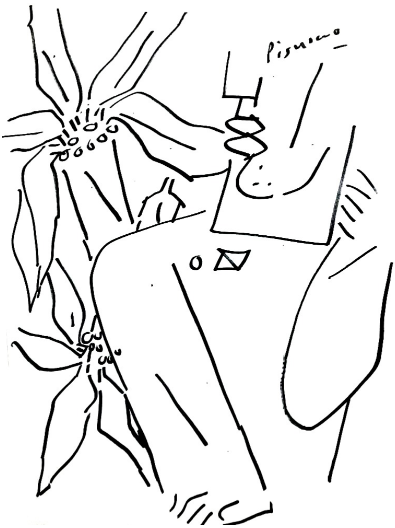

सौंदर्य और मैं

मैंने कहा: कहाँ से, हे सौंदर्य,
तुम्हारी चाल,
इतनी अच्छी कैसे है ?
उसने कहा: उस हंस से,
जो समुद्र में तैरता है.
मैंने कहा: क्या यह मेंहदी है,
जो तुम्हारे बालों को,
चमकदार बनाती है ?
उसने कहा: यह प्राकृतिक है.
मेरी सुंदरता मेरी है.
मैंने कहा:
तुम्हारी वाणी की मधुर ध्वनि
मेरा सिर घुमा देती है.
मुझे तुम्हारे लिए
अफ़सोस है, प्रिय, उसने कहा.
मैंने कहा:
चलो, उन फूलों की

क्यारियों की तरफ चलते हैं.

उसने कहा:

तुम्हारा यह प्रस्ताव

मुझे अस्वीकार है.

मैंने कहा:

तुम्हारी पलकों ने

मेरे सीने को छेद दिया है.

उसने कहा:

आनंद के साथ मेरे पीड़ित धन्य हैं.

मैंने कहा:

बताओ, प्रेमी को आराम

कहाँ मिल सकता है ?

उसने कहा: सिर्फ अपनी प्रेमिका के आगोश मैं.

मैंने कहा: हे सौंदर्य,

मनुष्य का एकमात्र धन प्रेम है.

उसने कहा: भिखारी ही सोचते हैं कि

प्यार काफी है.

मैंने कहा: तेरे सीने पर

ऊपर से भेजे हुए अनार हैं.

उसने कहा:

यार, तुम अपने दिमाग से बाहर हो.

मैंने कहा:

बेचारे आशिक पर तुम जुल्म कर रही हो.

उसने कहा:

तुम्हारे शब्दों में कुछ भी नया नहीं है.

मैंने कहाः

तेरे होंठ मधु-सी ओस से चमकते हैं.

उसने कहा:

यह तुम्हारी तरह के पुरुषों के लिए दवा है.

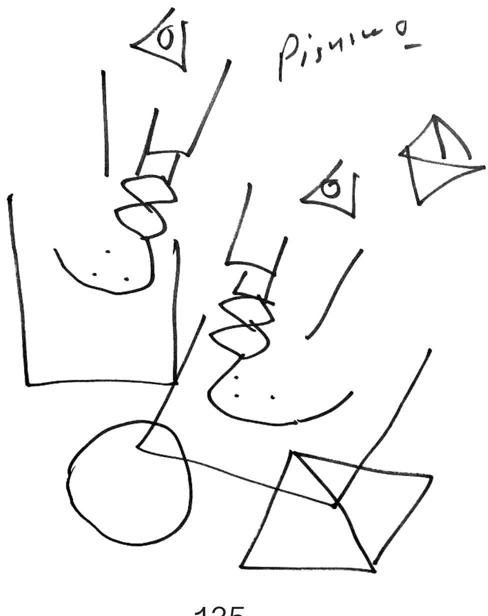

जिन्दा लोगों को सम्मान दो

जब तक लोग जीवित हैं,
उन्हें महत्व दें,
अच्छे लोगों को "अच्छा" बुलाओ,
जब तक वे जीवित हैं.
जो बुरे हैं उन्हें "बुरा" बुलाओ,
जब तक वे जीवित हैं.
हर कोई खुद की
असली कीमत जानता है.
अगर मैं गलत हूँ,
तो मुझे धिक्कार दो.
मैं तुम से,
एक लाख बार भीख माँगता हूँ.
कवियों को,
जीवित रहते हुए महत्व दें.
सेना के जवानों का,
जीवित रहते हुए स्मारक खड़ा करें.
भविष्य पर पूरी तरह निर्भर न रहें.

अपने शब्दों को, भविष्य के लिए न बचाएं.
मुझे "भविष्य" से नफरत है.
मुझे असमय की हरकतों से नफरत है.
मुझे गपशप करने वालों,
और बकबक करने वालों से नफरत है.
ईमानदार लोगों को,
जिंदा रहते हुए खुश करो.
जीवन में इसी उद्देश्य के साथ जियो.
बेईमानों को जिंदा रहते हुए,
बेनकाब करो.
गद्दारों को उनके नाम से बुलाओ,
चालाकों को बुलाओ, "लोमड़ियों",
बहादुरों को बुलाओ, "शेर",
जीवित रहते हुए लोगों को महत्व दें.
जीवित रहते हुए,
सभी को अपना स्थान बताएं.
यह बुरे के जीवन को छोटा कर देगा,
और अच्छे के जीवन को लंबा करें.
इंसान के मरने के बाद ही,

हमारा दिल,
प्यार और सम्मान से क्यों भरा होता है ?
अच्छे मरने के बाद ही अच्छे क्यों बनते हैं.
जो सदा बुरा करते हैं,
वो बेईमान भी ईमानदार हो जाते हैं.
अजनबी भी हमें प्यारे हो जाते हैं.
हम उन्हें याद करते हैं.
हम श्रद्धांजलि लिखते हैं.
हम उन सभी को "अच्छा" कहते हैं.
और उन्हें बाद के जीवन में देखते हैं.
यह विलंबित आशीर्वाद किसलिए है ?
क्या कब्र बड़ी हो जाएगी ?
या मरा हुआ फिर से,
जीवित हो जाता है ?
मुझे ये पुरानी परंपराएं पसंद नहीं हैं.
मुझे कब्रों का यह प्यार पसंद नहीं है.
मुझे इस तरह का सम्मान पसंद नहीं है.
मुझे यह पसंद नहीं है.
मुझे यह असमय सम्मान नहीं चाहिए.

मैं अपने जीवन के,
एक पल को कभी नहीं बदलूंगा.
हजारों सुनहरी मौतों के लिए.
अगर मैं गलत हूँ,
तो मुझे माफ़ कर दो.
मैं बूढ़े और जवान दोनों को,
समान रूप से संबोधित करता हूँ.
लोगों को तब महत्व दें,
जब तक वे जीवित हों.

प्यार करता हूँ

"मैं तुमसे प्यार करता हूँ."
बिना जाने कैसे,
कब, या कहाँ से.
मैं आपसे,
बिना किसी समस्या, या गर्व के,
सीधे प्यार करता हूँ.

मैं तुमसे,
इस तरह प्यार करता हूँ.
क्योंकि मैं प्यार करने का
कोई और तरीका नहीं जानता.
सिवाय इस रूप के,
जिसमें न मैं हूँ,
और न तुम हो.

इतना करीब, कि
तुम्हारी आंखें,
मेरे सपनों के साथ बंद हो जाएं.

तुम्हारे लिए मेरे प्यार को,
मापा नहीं जा सकता.
यह आकाश की तरह विशाल है.
और अनंत ब्रह्मांड की तरह,
चलता रहता है.

मैं तुम्हें,
एक सूर्यास्त के चित्र में देखता हूँ.
दो प्रेम पक्षियों के नृत्य में.
और मुझे लगता है, कि
तुम मेरे दिल में रह रहे हो.
तुम्हारे लिए मेरा प्यार,
मेरी आँखों में दिखता है.

इतना कोमल, और
आनंद से भरा हुआ,
मेरे दिल के गाए जाने का कारण,
तुम ही हो.
और तुम ही मेरी धूप हो.

मेरे प्यारे,
तुम मेरी खूबसूरत परी हो.
प्यार करना,
मेरे जीवन को अर्थ देता है.
पहले मैंने कभी,
ऐसा महसूस नहीं किया है.

मैं अपनी आत्मा से मिल चुका हूँ.
और मैं यहां रहने के लिए हूँ.
आपके साथ हर दिन,
वैलेंटाइन डे है.
लेकिन इस खास दिन पर,
मैं कहना चाहूँगा,
आपके लिए, मेरे प्यार के लिए,
धन्यवाद !
यह मेरी आत्मा में.
स्वर्ग की शांति लाता है.

मेरा कोई पता नहीं है

मैं बिना पते के रह रहा हूँ.
जैसे सूरज और आसमान.
मैं दिन से रात तक,
बिना पते के रह रहा हूँ.
मेरा पता है.
हरे भरे खेत और जंगल.
मैं अपना पता चट्टानों,
और पहाड़ों पर,
अपने पैरों के,
निशान से लिखता हूँ.
अंतहीन हरे-भरे खेतों में,
फुसफुसाते हुए,
झीलों में लहरों के साथ,
और घाटियों में,
झरनों के साथ.
बस एक गली,
बस एक कमरा.

नहीं, मुझे ऐसे पते की,
जरूरत नहीं है.
बादल मेरे साथी हैं,
हवा मेरा पता है.
जहां भी फूल है,
वहीँ मेरा पता है.
एक शब्द में,
मैंने इस दुनिया को,
अपने पते के रूप में चुना है.
मैं बिना पते के जी रहा हूँ.
जैसे सूरज और आसमान.
दिन से रात तक,
हिमालय के पहाड़,
मेरे सिर के नीचे एक तकिया हैं.
रात में,
और धूसर बादल मेरे कंबल हैं.
मुझे जीने का यह तरीका
बहुत पसंद है.

अकेलापन

सुखी आत्माएँ,
कामना से खिल उठती हैं.
बुरे में दया के विपरीत, जहर होता है.
एक दयालु हृदय,
हमारे लिए एक मधुर उपाय.
एक हाथ में फूल पकड़े हुए,
दूसरे में चाकू.
इस नाजुक जीवन में,
एक आदमी, एक विपरीत,
वास्तविकता है.

मैं अकेला रहना चाहता हूँ.
हर चीज से थक गया हूँ.
शोर और शहर की गंदगी से,
लोगों से.
मेरे दैनिक कर्तव्य के लिए,
मुझे अकेलेपन की आवश्यकता है.

हर चीज से थके हुए,
अजीब धैर्य से, सहनशीलता से,
दुनिया के चक्कर लगाने के लिए.
मुझे मुझसे बहुत दूर रहना है.
इतनी सारी पार्टियां,
इतनी सारी बैठकें,
मुझे बकवास और बेकार के भाषणों से नफरत है.
इसके बजाय,
मैं अपनी दुनिया में चला जाता हूँ.

फिर भी, पास में,
एक चापलूस अपनी बात कहता है.
प्रशंसा और प्रशंसा,
और प्रशंसा से भरा हुआ.
ईमानदार शब्द कम और कम हैं.
इतने चेहरों पर फिर अभिमान नहीं,
सिर्फ नफरत मेरी हड्डियों में व्याप्त है.
मैं अपने आप से कहता हूँ,
"भगवान लानत है".

आराम से,
आपको अकेले रहने की जरूरत है.
जब दैनिक देखभाल के साथ,
दुनिया का अन्याय,
मेरे दिल को भर देता है.

मैं मौज-मस्ती और शादी से उदास हूँ.
मैं गरीबों और धन से,
अंतहीन समारोहों से, दूर भागना चाहता हूँ.
बस, बस बांसुरी बजाने के लिए,
और अकेलेपन का गीत बजाओ.
जब मैं हताश होता हूँ,
तो अपनी आंखें बंद कर लेता हूँ.
और किसी भी मौके पर,
अकेलेपन के लिए प्रयास करता हूँ.
अकेलेपन में,
मेरी बुद्धि का शिखर समाप्त होता है.
अकेलापन, मेरे सपनों की हकीकत है.

देश प्रेम

यदि कोई व्यक्ति,
अपने देश से प्रेम नहीं करता है.
यदि कोई व्यक्ति,
अपने देश का मूल्य नहीं जानता है.
तो उसे "यह जानो".
कहने का क्या अर्थ है ?
अगर तुम्हारे खुशी के दिन,
बहुत पीछे छूट गए हैं,
तो उन्हें वापस बुलाने का क्या मतलब है ?

अगर तुम्हारे पास,
रहने के लिए कोई जमीन नहीं है,
तो जीने का क्या मतलब है ?
अगर तुम्हारी जमीन,
देशद्रोही को दे दी गई है,
तो "वापस जाओ",
कहने का क्या मतलब है ?

यदि कोई व्यक्ति,
गुप्त रखना नहीं जानता,
तो उसे अपना बताने का,
क्या अर्थ है ?

किसी और के बगीचे को,
अपना कहने का क्या मतलब है ?
किसी और का शहर या गाँव
"मातृभूमि" ?
लिखने वाले को "कवि" मत कहो.
मेरी कविता का अर्थ क्या है ?

आभार

पिसुरवो के रूप में जाने जाने वाले चित्रकार जितेंद्र सुरलकर की कलात्मक क्षमता बहुत कम उम्र में ही स्पष्ट हो गई थी. उनकी रचनात्मकता असाधारण है, और इस पुस्तक में उनके द्वारा बनाई गई रुचि और शैलियों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है. उनकी ये कलाकृतियां कविताओं को कहानी में खींचतीं है. जितेंद्र सुरलकर पिसुरवो एक प्रसिद्ध वरिष्ठ कलाकार हैं, जो मुंबई भारत से रहते हैं और वहीँ काम करते हैं.

हम उनके इस सहयोग के लिए हृदय से आभारी हैं